सफलता की कहानियां

-जिला ऊना

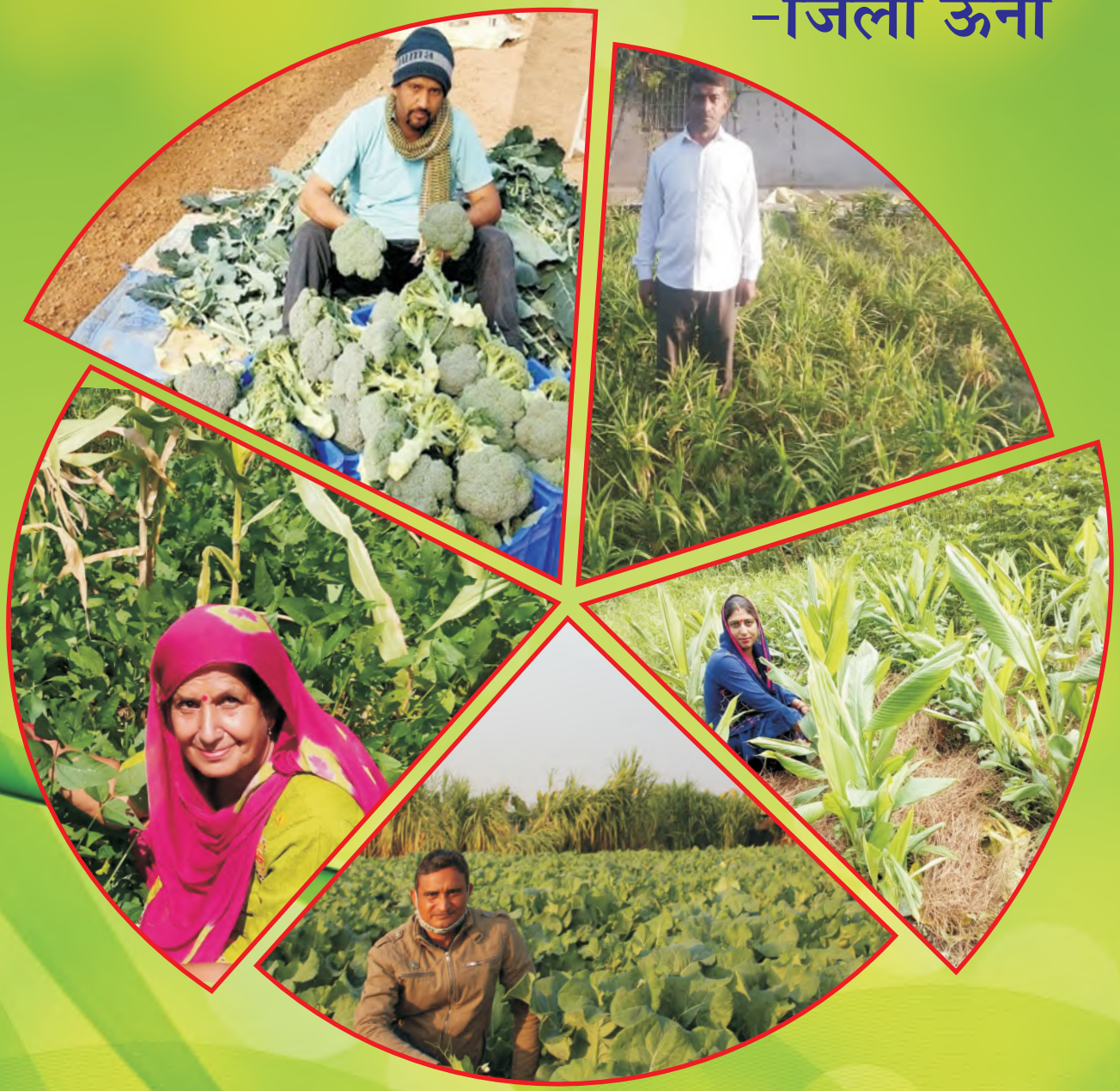

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना
हिमाचल प्रदेश सरकार

मार्गदर्शन

प्रो. राजेश्वर चंदेल

कार्यकारी निदेशक

संकलन एवं संपादन

डॉ. रविन्द्र जसरोटिया

परियोजना निदेशक

डॉ. राजेश राणा

उप. परियोजना निदेशक

सलाहकार मण्डल

डॉ. रजत दत्ता, ओंकार सिंह, दविन्द्र कौर, शिवांक जसवाल,
ओशिन, विमला कुमारी, गुरमीत सिंह, प्रिंयका, उल्लास, सतीश कुमार,
अजय कुमार, सोनू, कविता, ऋषि, वीना

संपादन सहयोग

सोनिया कुमारी

अंकुश शर्मा

दीक्षा सैनी

सहयोग

समस्त खण्ड तकनीकी प्रबंधक,
सहायक तकनीकी प्रबंधक
जिला ऊना

मुद्रक

इशांत इन्डसट्रिस, नजदीक सब्जी मण्डी, राणा मार्केट अम्ब रोड़ ऊना

कृषि,पशुपालन,मतस्य, ग्रामीण विकास
एवं पंचायती राज मंत्री हिमाचल प्रदेश
शिमला-171002

संदेश

हिमाचल प्रदेश सरकार की महत्वकांक्षी योजना ''प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान'' के अंतर्गत जिस तरह से सुभाष पालेकर खेती को अपनाने में किसान बागवान रुचि दिखा रहे हैं, यह खेती के विकास के लिए निश्चय ही बहुत उत्साह वर्धक है। वर्ष 2018 से शुरु इस परियोजना के अंतर्गत बहुत ही अल्पावधि मे लगभग 1, 50,000 किसान परिवारों ने हिमाचल प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों तथा सभी कृषि-भोगोलिक क्षेत्रों में, हर फसल तथा फलों पर इस कृषि पद्धति को अपना कर चुनौतीपूर्ण कार्य किया है।

जिला ऊना एक कृषि प्रधान जिला है। जिला के मेहनतकश किसान गेहूँ, मक्का, धान, गन्ना, नीबूं प्रजाति के फल, आम, लीची इत्यादि फसलों की खेती करते हैं। पिछले तीन वर्षों मे जिले में 9000 से ज्यादा किसान परिवारों ने 750 हैक्टेयर क्षेत्रफल मे विभिन्न फसलों के उत्पादन, कीट-बीमारी प्रंबधन तथा किसान आय वृद्धि तथा खेती खर्च घटाने, बिना कृषि रसायनों एवं खादों के उपयोग से प्राकृतिक खेती कर अनुकरणीय पहल की है।

जिला ऊना के सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़े सफल किसानों के अनुभव, उनके खर्चें में आई कमी तथा आय में वृद्धि जैसे मुख्य बिंदुओ का संकलन एवं प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। नये किसान-बागबानों की जागरुकता एवं शिक्षण हेतु यह एक प्रेरणा का काम करेगी। मेरी सभी किसान साथियों को शुभ कामनायें। राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई (SPIU), शिमला तथा आत्मा टीम ऊना को उनके विविध एवं सफल प्रयासों हेतु बधाई।

वीरेंद्र कंवर

हिमाचल प्रदेश सरकार

संदेश

राज्य परियोजना निदेशक
(PKKKY) एवं विशेष सचिव,
वित्त हिमाचल प्रदेश शिमला-171002

देशभर में कृषि क्षेत्र में आई हरित क्रान्ति के दुष्प्रभाव आज समाज और जीवन पर पड़ते स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं। भूमि की उर्वरक क्षमता का ह्रास, किसानों की बढ़ती खेती लागत, घटता या स्थिर होता उत्पादन तथा अन्ततोगत्वा किसान का खेती-बागवानी से हटकर रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन चिन्ता का विषय बन गया है। हमारा राज्य हिमाचल प्रदेश भी इन दुष्प्रभावों से अछूता नहीं है। रासायनिक खेती के इन प्रत्यक्ष दुष्प्रभावों के निदान हेतु 'जैविक खेती' का विकल्प भी सार्थक सिद्ध नहीं हुआ। 'जैविक कृषि' का आदान आपूर्ति हेतु बाजार से जुड़ाव इस विधि को अधिक खर्चीला बना रहा है।

'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के अन्तर्गत पद्मश्री सुभाष पालेकर द्वारा विकसित खेती विधि क्रियान्वयन द्वारा पिछले तीन वर्षों के छोटे से अन्तराल में 1,50,000 से अधिक किसान-बागवानों ने अपने-2 खेत बगीचे में इस खेती विधि के मॉडल खड़े कर लिए हैं। यह हिमाचल प्रदेश की खेती को रसायनमुक्त करने की दिशा में एक सार्थक पहल है। इस परियोजना के संचालन का कार्य 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' के माध्यम से पूरे प्रदेश में सफलतापूर्वक संचालित किया जा रहा है, जिसमें हमारे सभी अधिकारी एवं कर्मचारी पूरी तन्मयता से ध्येयपूर्वक कार्य कर रहे हैं।

ऊना जिले केसफल किसानों के खेती विवरण का प्रकाशन इस दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस प्रयास से अन्य प्राकृतिक खेती किसान भी अपने आप को सफल किसान के रुप में लाने का प्रयत्न करेंगे। मेरी जिला के सभी किसानों के लिए शुभेच्छा।

राकेश कंवर

(भा०प्र०से०)

संदेश

जिलाधीश
ऊना, हिमाचल प्रदेश

ऊना कृषि क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण जिला है। जिले के किसान मेहनतकश है तथा नई-नई कृषि तकनीकों सफलतापूर्वक अपने खेतों में अपनाकर अधिक आय प्राप्त कर रहे हैं। जिले को सब्जियों एवं गेहूँ की खेती करने वाले जिला के रुप में विशिष्ट पहचान मिली है।

कृषि रसायनों एवं खादों के असुंलित उपयोग से कृषि उत्पादन लागत का बढ़ना, मिट्टी एवं पर्यावरण को नुकसान तथा उत्पाद का जहरीला होना जैसी कुछ समस्यायें विगत वर्षों से बढ़ रही हैं। प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की सफलता ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बिना कृषि रसायनों एवं रासायनिक खादों से कृषि की जा सकती है तथा सिंचाई जल की भी आवश्यकता होती है।

मुझे यह जानकर हार्दिक खुशी हो रही है कि कृषि विभाग, कृषि प्रोद्यौगिकी प्रबंध अभिकरण (आतमा), जिला ऊना द्वारा प्राकृतिक खेती में सफल किसानों की सफलता की कहानियों को सकंलित कर इसका प्रकाशन किया जा रहा है। यह सफलता की कहानियाँ जिले एवं प्रदेश के अन्य किसानों के लिए मार्गदर्शन करेंगी। मैं सभी सफल किसानों तथा प्राकृतिक खेती कर रहे अन्य किसानों को बधाई देता हूँ जिन्होंने न केवल प्राकृतिक खेती को सफलतापूर्वक अपनाया बल्कि रासायनिक खेती से तुलनात्मक ज्यादा आय प्राप्त कर रहे है।

मैं इन सफलता की कहानियाँ के प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का काम करेगी।

-राद्यव शर्मा

(भा०प्र०से०)

कार्यकारी निदेशक

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

(हि.प्र.)

संदेश

हिमाचल प्रदेश को देश भर में 'फल राज्य' के रुप में ख्याति प्राप्त है। पिछले दो दशकों में प्रदेश में बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में भी अपनी पहचान बनाई है। आज प्रदेश से लगभग 7,500 करोड़ की फल-सब्जियां देश के विभिन्न राज्यों में जा रही हैं। लेकिन स्थिर होती फसल उत्पादकता और बढ़ती कृषि-बागवानी लागत, किसान बागवान के लिए चिंता का कारण बनती जा रही है। एक वैज्ञानिक अनुसंधान के अनुसार प्रदेश में खेती रसायनों के बढ़ते दुरुपयोग के कारण हर 5वां फल-सब्जी इत्यादि का नमूना कीटनाशक-फफूंदनाशकों की अवशेष मात्रा अधिकतम तय सीमा से ऊपर है, जो देशभर के आंकड़ों से लगभग 1% अधिक है। खेती-बागवानी की यह परिस्थिति किसान और उपभोक्ता दोनों के लिए गम्भीर चिंता का विषय बनती जा रही है।

देश का किसान आज एक ऐसी व्यावहारिक खेती विधि की तलाश में है जिससे उसकी कृषि लागत घटे और उत्पादकता तथा आय में वृद्धि हो। 'जैविक खेती' के रुप में प्रचारित वैकल्पिक विधि ने आम किसान का उत्पादन घटाया, साथ ही रासायनिक खेती के अनुपात में कृषि लागत को भी अधिक बढ़ा दिया।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने 'किसान की आय दोगुनी' करने हेतु फरवरी 2018 में 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान' योजना प्रारम्भ कर इस दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। इस योजना के माध्यम से प्रदेश के किसान-बागवानों को 'पद्मश्री सुभाष पालेकर' द्वारा विकसित प्राकृतिक खेती द्वारा प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारण संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह प्रशिक्षित किया जा रहा है। देश की नीति निर्धारण संस्था 'नीति आयोग' ने अपने दृष्टि पत्र में यह संदर्भित किया है कि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती 'की खेती लागत कम करने के साथ फसल उत्पादकता बढ़ाने हेतु सक्षम खेती विधि है, जिसे अपनाकर किसान आय दोगुनी करने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु 'राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई' द्वारा प्रदेश में एक व्यापक कार्ययोजना बनाई गई है, जिसमें विभिन्न गतिविधियों द्वारा एक लाख किसानों को इस वर्ष प्राकृतिक खेती से जोड़ा जा रहा है। लगभग 1,50,000 से अधिक किसानों ने इस प्रति से पूरी या आंशिक रुप से खेती करना आरंभ कर दिया है। विभिन्न प्रदेशों के अधिकारी और किसान इनके मॉडल फार्म पर भ्रमण कर रहे हैं।

इस प्राकृतिक विधि का जो किसान पूरी तरह प्रशिक्षित होकर प्रयोग कर रहे हैं, उनकी सफलता को आंकड़ों सहित इस पुस्तिका में देने का प्रयास किया गया है, ताकि इन किसानों को प्रोत्साहन मिले और वे दूसरों के लिए भी प्रेरक बनें।

मैं इन सफलता की कहानियाँ के प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ और मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह अन्य किसानों के लिए प्रेरणा का काम करेगी।

-प्रो० राजेश्वर सिंह चंदेल

संदेश

परियोजना निदेशक
आतमा जिला ऊना (हि.प्र.)

जिला ऊना में ''प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना'' के तहत सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती को किसानों के घर-द्वार पहुंचाने के लिये जिले में मौजूद प्रसार अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लगन, मेहनत एवं उनके निरन्तर प्रयासों से जिले के प्रगतिशील किसान भी इस कृषि पद्धति को अपनाने के लिये आगे आ रहे हैं। इस पद्धति में जल, जमीन, जीवन एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ-साथ किसान की आर्थिकी मजबूत हो रही है। उत्पादन लागत न के बराबर आ रही है तथा उत्पादन में कोई कमी नहीं आ रही है।

जिला के समस्त प्रसार अधिकारी, विशेषकर डा. राजेश राणा उप-परियोजना निदेशक एवं विभिन्न विकास खण्डों में तैनात खण्ड तकनीकी प्रबंधक/सहायक तकनीकी प्रबंधक सभी से निष्ठा पूर्वक कार्य किया है। किसानों के साथ सीधा संवाद कायम करके इस पद्धति को जन-आन्दोलन बनाने में निरन्तर प्रयासरत हैं।

प्रस्तुत सफलता की कहानियां जिला ऊना के जुझारु एवं मेहनती किसानों की उपलब्धियाँ का संकलन है। किसान बधाई के पात्र है जो अन्य किसानों के लिए भी प्रेरणा का काम कर रहे है।

इन सफलता की कहानियां के प्रकाशन से जुड़े समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

डॉ. रविन्द्र सिंह जसरोटिया

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
सफल प्राकृतिक खेती कर रहे किसान

रमेश राणा, ज्वार पंचायत, अम्ब ब्लॉक

सुषमा देवी, नैहरी नौरंगा पंचायत, अम्ब ब्लॉक

प्रीतम चन्द, जुबेहड़ पंचायत, अम्ब ब्लॉक

रीटा शर्मा, भंयाभी पंचायत, बंगाणा ब्लॉक

मनजीत सिंह, सिहाना पंचायत, बंगाणा ब्लॉक

सावित्री देवी, छपरोह पंचायत, बंगाणा ब्लॉक

कुलदीप सिंह, डंगोह खास पंचायत, गगरेट ब्लॉक

संतोष कुमार, दयोली पचांयत, गगरेट ब्लॉक

संकेत कुमार, अप्पर भंजाल पंचायत, गगरेट ब्लॉक

तीर्थ राम, छत्तरपुर ढाडा पंचायत, हरोली ब्लॉक

रमन कुमार, भदसाली पंचायत, हरोली ब्लॉक

विजय कुमार, हरोली पंचायत, हरोली ब्लॉक

सुरेश चंद, झम्बर पंचायत, ऊना ब्लॉक

जोगिन्द्र पाल, लोअर बसाल पंचायत, ऊना ब्लॉक

बी गुरु रविदास स्वयं सहायता समूह, बनगढ़ पंचायत, ऊना ब्लॉक

प्राकृतिक खेती से बढ़ाया मुनाफा, क्षेत्र के नामी किसान बने रमेश राणा

रमेश राणा

गांव : लंग्याना

ग्राम पंचायत : ज्वार

विकास खण्ड: अम्ब

दूरभाष संख्या : 70188-74338

नौणी विश्व विद्यालय में छः दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त

कृषि में बढ़ती लागत व कम हो रहे उत्पादन से परेशान विकास खण्ड अम्ब के लांग्याना गांव के कृषक श्री रमेश राणा कृषि छोड़ने का मन बना चुके थे। पुश्तैनी व्यवसाय कृषि को छोड़कर वह शहर में नौकरी करने की सोच रहे थे, लेकिन आतमा परियोजना के अधिकारियों ने उन्हें नौणी विश्व विद्यालय में लगे श्री पालेकर जी के शिविर में ले जा कर उनकी सोच बदल दी। वहां से आते ही उन्होंने प्राकृतिक खेती करने का निर्णय लिया।

रासायनिक खेती से मक्की की फसल में बीमारियां आती थीं और उपज भी कम थी, जिससे बहुत नुकसान होता था परंतु अब ऐसा नहीं है, जहां बिमारी आ रही थी वहां पर जीवामृत, खट्टी लस्सी व अन्य आदानों के प्रयोग से स्वस्थ फसल है। माश व तिल का सह फसल के रुप में उगा कर दोनों फसलों की पैदावार बढ़ी है। वहीं मक्की की फसल में अधिक भुट्टे प्राप्त हुए।

रमेश जी अपने खेतों में आलू, प्याज़, अरबी, गोभी, मूली की भी जहरमुक्त फसल तैयार की है और गांव व पड़ोस के किसानों को भी इस आध्यात्मिक खेती विधि से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। खेती में बढती लागत से निराश व हताश किसान यदि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि को अपनाएं तो उनकी आय में कई गुणा बढ़ोतरी होना तय है। इस खेती में कम लागत में बेहतर परिणाम तो मिलते ही हैं, साथ में हम जहर खाने से भी बचते हैं।

''प्राकृतिक खेती में मुख्य फसल के साथ अंतवर्तीय फसलें लगाने से एक तरफ जहां मेरी आय में वृद्धि हुई, वहीं ज़मीन पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव देखने मिला है। जीवामृत और घनजीवामृत के प्रयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ी है, जिसका प्रभाव कृषि उपज बढ़ने के रुप में स्पष्ट दिख रहा है।''

-रमेश राणा

परिवार के साथ किसान रमेश राणा

मक्की के बीज बीजामृत के साथ उपचारित करते हुए

प्रयोग से पहले जीवामृत छानते हुए

मक्की की मुख्य फसल दिखाते हुए

दस कनाल भूमि पर प्राकृतिक खेती कर रहे रमेश

मुबारिकपुर (ऊना)। प्राकृतिक खेती की तरफ किसानों का रुझान लगातार बढ़ रहा है। क्षेत्र के लगयाना के रमेश राणा भी प्राकृतिक खेती में हाथ आजमा रहे हैं। रमेश राणा लगयाना में 10 कनाल भूमि पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। रमेश राणा ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केंद्र सोलन से प्रशिक्षण लिया। इसके बाद उन्होंने प्राकृतिक खेती शुरू की है। रमेश राणा ने बताया कि ग्रामवासियों का प्राकृतिक खेती किसान ग्रुप बनाया गया है। हर किसान को प्राकृतिक खेती करने के लिए बढ़ावा दे रहे हैं। बताया कि किसान 40 लीटर पानी, देसी गाय का गोबर 2 किलो, देसी गाय का मूत्र 2 किलो, 200 ग्राम बेसन, 200 ग्राम मिट्टी को मिलाकर मिश्रण बनाकर जीवा अमृत बनाकर खेती पर इस्तेमाल करने को कह रहे हैं। उन्होंने बताया कि यह देसी मिश्रण बनाकर फसलों और सब्जियों का रस चूसने वाले कीड़ों से बचाव कर रहे हैं। रमेश राणा ने बताया कि प्राकृतिक खेती करने से किसानों को कम खर्च से अधिक पैदावार हो रही है। बताया कि प्राकृतिक खेती पर्यावरण को बढ़ावा देने के साथ खेत के लिए भी लाभदायक है। संवाद

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	आलू, प्याज, गोभी, मूली, मक्की, माश	50,000	80,000	30,000	15000	85000	70000

आत्म संतुष्टि के लिए अपनाई प्राकृतिक खेती

सुषमा कुमारी
गांव: नैहरी
ग्राम पंचायत: नैहरी नौंरगा
विकास खण्ड : अम्ब
जिला ऊना, हिमाचल प्रदेश
दूरभाष संख्या : 7018388940
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

जिला के अम्ब विकास खण्ड के गांव नैहरी नौरंगा की श्रीमति सुषमा देवी जी एक गृहणी हैं। अपने खेती के शौक को पूरा करने के उद्देश्य से उन्होंने रासायनिक खेती से शुरुआत की। रसायनों पर बढ़ते खर्च व पर्यावरण पर पड़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए वह अपना शौक त्यागने का मन बना चुकी थी।

रासायनिक खेती में घटती उपज और बढ़ते खर्चों का विकल्प तलाश रही सुषमा जी को खण्ड स्तर पर तैनात आतमा अधिकारियों ने 'प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना' के बारे में बताया। तत्पश्चात् उन्होंने पालमपुर में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के 6 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया जिसके बाद से वह इस विधि से खेती कर रही हैं और सफलता प्राप्त कर सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के प्रति आस पास के लोगों को भी जागरुक कर रही हैं।

'' मैं शुरु से ही खेती से रसायनों के प्रयोग के पक्ष में नहीं थी, परन्तु और कोई विकल्प भी नहीं था। लेकिन जब से मैं सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर रही हूँ, रसायनों का इस्तेमाल नहीं करने से मुझे शुद्ध फसल मिल रही है और खर्चा कम व मुनाफा भी अधिक हो रहा है। साथ ही इस बात की आत्म संतुष्टि है कि मैं औरों की तरह जहर नहीं उगा रही हूँ। मेरे खेतों में आने वाले अन्य किसानों से भी मैं यही कहती हूं कि प्राकृतिक खेती विधि समस्त प्रकृति को ध्यान में रखने वाली व उपभोक्ता को रसायनमुक्त व स्वस्थ अन्न उपलब्ध करवाने में सक्षम हैं।''

पिछले एक साल से इस विधि से सुषमा जी ने अपने खेतों में देसी माश, अदरक, सोयाबीन, रौंगी, अरबी, हल्दी को फसल लगाकर 1 लाख से अधिक शुद्ध मुनाफा कमाया है।

प्राकृतिक खेती के विभिन्न सिधान्तों को ध्यान में रखकर विभिन्न फसलें (मक्की, माश, भिण्डी, खीरा, हल्दी व अदरक) आदि उगा रही है। विभाग द्वारा प्रदान किए गए संसाधन भंडार के माध्यम से वह आसपास के किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में जागरुक करती हैं। वे उन्हें समय समय पर कृषि संबंधी जानकारियाँ भी देती हैं, जिसकी वजह से उन किसानों की खेती बाड़ी भी बेहतर हो गई है। इस विधि द्वारा सफल उत्पादन के बाद आस-पास के गांवों से भी किसान उत्सुकतावश उनकी फसल को देखने आते हैं एवं उनके खेत अन्य किसानों के लिए प्रशिक्षण केन्द्र बन गए है।

परिवार के साथ सुषमा कुमारी

बिजाई के लिए खेत तैयार करते हुए

घनजीवामृत तैयार करते हुए

हल्दी की मुख्य फसल दिखाते हुए

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रहे किसान

गोदपुर बनेहड़ा : विकास खंड अम्ब के तहत कृषि विभाग के प्रयासों से किसान प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रहे है। गांव नैहरी नौरंगा की किसान सुषमा कुमारी ने बताया कि उसने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केंद्र सोलन से प्रशिक्षण प्राप्त करके गांव में ही 10 कनाल भूमि में प्राकृतिक खेती कर रहे है। रमेश राणा ने बताया कि वह गांव में लोगों को प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे है। ग्राम वासियों का प्राकृतिक खेती किसान ग्रुप बनाया गया है और हर किसान को प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि किसान 40 लीटर पानी, देसी गाय का गोबर दो किलो, देसी गाय का मूत्र दो किलो, 200 ग्राम बेसन, 200 ग्राम मिट्टी का मिश्रण बनाकर जीवा अमृत बनाकर खेती पर इस्तेमाल

किसान सुषमा कुमारी • जागरण

कर रहे है। इस देसी मिश्रण से फसलों व सब्जियों का कीड़ों से बचाव हो रहा है। प्राकृतिक खेती करने से किसानों को कम खर्च से अधिक पैदावार प्राप्त हो रही है। प्राकृतिक खेती पर्यावरण को बढ़ावा देने के साथ-साथ खेत के लिए भी लाभदायक है। सस

चने के बीज का संस्कारण

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	मक्की, सोयाबीन, माश, रौंगी, गेहूं, चना, प्याज, गोभी, मूली, शलगम, भिण्ड़ी, खीरा, हल्दी, अदरक	25,000	95000	70000	10000	150000	140000

प्राकृतिक खेती बनी वरदान, बंजर भूमि में भी आई जान

प्रीतम चंद
गांव : जुबेहड़
ग्राम पंचायत : जुबेहड़
विकास खण्ड : अम्ब
दूरभाष संख्या - 9816125950
ग्राम पंचायत जुबेहड़ में दो दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त।

ऊना जिले के जुबेहड़ पंचायत के किसान प्रीतम चन्द क्षेत्र के किसानों के लिए एक मिसाल बन कर उभरे हैं। कृषि परिवेश में पले बड़े प्रीतम ने बताया कि कृषि ही उनका पारिवारिक व्यवसाय है। वह कई वर्षों से रासायनिक खेती करते आ रहे थे, लेकिन इसमें हर साल बाद कीटनाशकों और अन्य रसायनों पर खर्चा बढ़ ही रहा था, उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कई दिक्कतें भी आ रही थी। उपज में भी बढ़ोतरी होने के स्थान पर कमी हो रही थी। कृषि विभाग के आतमा अधिकारियों ने जब उन्हें सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में बताया, तब से उनकी ये दिक्कतें बिल्कुल खत्म हो गई हैं।

''लगातार रसायनों के प्रयोग से मिट्टी कठोर हो गई थी लेकिन अब मिट्टी भुरभुरी हो गई है, जिससे जुताई बहुत आसानी से हो जाती है। यह खेती विधि बहुत ही लाभदायक है, इसमें बाजार से कुछ भी लाने की जरुरत नहीं है। इस विधि से मैंने आलू की फसल उगाई थी जिसकी मुझे बंपर फसल प्राप्त हुई।''

बिना खाद व दवाईयों के प्रयोग से मेरे खेतों में काफी अच्छी फसलें हुई हैं। मेरी फसलों में बीमारियों बहुत कम आई और पौधे भी बहुत कम सूखे, जबकि पहले पौधों को मरने की समस्या बहुत रहती थी। रबी मौसम में गेहूँ,चने और मटर व खरीफ मौसम में मक्की, माश और भिंड़ी की फसल को साथ में लगा कर फसलों का स्वास्थय व पैदावार बढ़ी है। जीवामृत और घनजीवामृत के प्रयोग से मिट्टी का कठोरपन काफी हद तक कम हो गया है और मिट्टी की सेहत में भी काफी सुधार हुआ है।

विभाग द्वारा प्रदान किए गए संसाधन भंडार की मदद से वह अपने पड़ोसी किसानों को भी सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के विभिन्न आदान उपलब्ध करवाते हैं और अपनी आर्थिकी मजबूत कर रहे है। इसके साथ-साथ वह अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भी विभिन्न घटक बनाने की विधि सिखा चुके हैं।

परिवार के साथ प्रीतम चंद

गेहूं+चना+मटर का मिश्रित मॉडल दिखाते हुए

गेहूं+चना+मटर का मिश्रित मॉडल

अदरक की मुख्य फसल के साथ प्रतीम चंद

प्रीतम चंद 10 कनाल भूमि में कर रहा प्राकृतिक खेती

मुबारिकपुर, 16 अक्तूबर (केहर): विकास खंड अम्ब में कृषि विभाग किसानों को प्राकृतिक खेती करने के लिए बढ़ावा दे रहा है। किसान प्रीतम चंद पुत्र नानक चंद गांव सरोई पंचायत जुबेहड़ ने बताया कि उसने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केंद्र सोलन से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने गांव में ही 10 कनाल भूमि में प्राकृतिक खेती शुरू की। ग्रामीणों का प्राकृतिक खेती किसान ग्रुप बनाया गया है और हर किसान को प्राकृतिक खेती करने के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि 40 लीटर पानी, देसी गाय का गोबर 2 किलो, देसी गाय का मूत्र 2 किलो 200 ग्राम व बेसन 200 ग्राम मिट्टी में मिलाकर मिश्रण बनाकर जीवामृत बनाकर खेती में इस्तेमाल करने के लिए किसानों को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने बताया यह देसी मिश्रण फसलों व सब्जियों का रस चूसने वाले कीड़ों से बचाव करता है। प्राकृतिक खेती करने से किसानों की कम खर्च से अधिक पैदावार हो रही है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	मक्की, माश, भिण्डी, गेहूं, चना, मटर	20,000	70,000	50000	10000	100000	90000

परिवार को शुद्ध, पोष्टिक व ज़हर मुक्त भोजन खिलाने की चाह ने प्राकृतिक खेती से जोड़ दिया

रीटा शर्मा
गांव : भयांभी
ग्राम पंचायत : भयांभी
विकास खंड : बंगाणा
दूरभाष संख्या : 99816679783
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

बढ़ते खेती के खर्चे, घटते उत्पादन एवं दिन-प्रतिदिन बढ़ती लाईलाज बिमारियों ने विकास खण्ड बंगाणा की रीटा शर्मा को रसायनिक खेती से हटाकर प्राकृतिक खेती से कुछ इस तरह जोड़ दिया कि आज वह न केवल अपने परिवार के लिए बल्कि अपने गांवों के लोगों के लिए ज़हर मुक्त सब्जियां उगा रही है जिससे उनकी पारिवारिक आय में भी वृद्धि हुई है।

उन्होंने पालमपुर से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का 6 दिवसीय प्रशिक्षण लिया। इस प्रशिक्षण में वह इस खेती पद्धति के जनक पद्म श्री सुभाष पालेकर जी के व्याख्यान व वैज्ञानिक अनुभव से इतनी प्रभवित हुई कि उन्होंने अपनी पूरी जमीन पर प्राकृतिक खेती करने का निर्णय कर लिया। प्रशिक्षण शिविर से लौटते ही उन्होंने साहीवाल नस्ल की गाय खरीदी व उसके गोबर-गौमूत्र से निर्मित आदानों का खेतों में प्रयोग करना शुरु कर दिया।

''प्राकृतिक खेती में रासायनिक दवाइयों का प्रयोग नहीं होता, इसीलिए इससे फसलों की रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक है व लागत मूल्य भी कम होता है। इस खेती विधि में पानी की भी कम जरुरत रहती है, जिससे सूखे वाले क्षेत्रों में भी आसानी से खेती की जी सकती है। जीवामृत, घनजीवामृत व आच्छादन करने के कुछ दिन बाद ही मिट्टी में देसी केचुंए भी आने लगे हैं व अब जमीन ठोस नहीं होती व हल भी आसानी से चलता है।''

क्षेत्र के अन्य किसान भी इस खेती विधि के प्रति आकर्षित हो रहे हैं, इसलिए वह अन्य किसानों को भी अपने खेतों में इस विधि के बारे में पूरी जानकारी दे रही हैं ताकि उन्हें भी रसायन मुक्त खेती के लाभों का पता चल सके। मैं सभी किसानों को यही कहना चाहती हूँ कि रासायनिक खेती में प्रयोग हो रहे कीटनाशकों के दुष्प्रभाव चारों तरफ देखने को मिल रहे है और खेती में इनके अंधाधुंध प्रयोग से किसानों के खर्चे व ऋण बढ़ते जा रहे हैं। प्राकृतिक खेती अपनाकर हम सब अपनी जमीन की सेहत सुधार कर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

परिवार सहित खेत में काम करते हुए

पॉलीहाउस में गोभी की फसल का निरीक्षण करते हुए

घनजीवामृत मिलाकर लहसुन की बिजाई करते हुए

हड्डू की सवित्री व भ्याम्बी की रीटा ने अपनाई प्राकृतिक खेती, सुधारी आर्थिकी

अर्थ प्रकाश/अग्रवाल

बंगाणा, 13 अक्तूबर। आज पूरा देश ही नहीं बल्कि पूरा विश्व, बेरोजगारी ,महंगाई के साथ-साथ विभिन्न असाध्य रोगों से जूझ रहा है जिसका मूल कारण आज की जीवन चर्या के साथ-साथ खानपान के लिए इस्तेमाल होने वाले खाद्य पदार्थों का उत्पादन जिसमें एंटीबायोटिक, रसायनिक खाद तथा अन्य कीटनाशक का बेतहाशा प्रयोग मुख्य रूप से शामिल है।

बढ़ती महंगाई से खेती-किसानी में फसल की लागत दिन-प्रतिदिन ब?ती जा रही है। जिससे किसान परेशान होकर खेती से दूर भागता जा रहा है। लेकिन वहीं कुछ सफल किसान हैं जो कुछ देसी तरीकों से फसलें उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ कर रहे हैं। उन किसानों में शामिल हैं उपमंडल बंगाणा के पंचायत लठियाणी ककी सेवानिवृत

अध्यापिका की सवित्री देवी, पंचायत सुकडियाल के गांव भ्याम्बी की रीता देवी जिन्होंने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती कर और उनमें जीवामृत और घनजीवामृत जैसी खादों का प्रयोग कर अपनी आर्थिकी को और सुदृढ़ किया है। किसान सवित्री व रीटा देवी ने कहा कि वे घर पर ही देसी तरीकों से खाद और कीटनाशक दवाइयां तैयार कर लेती हैं। जिसमें नाम मात्र की लागत आती है। इन तरीकों को अपनाकर न सिर्फ शुद्ध अनाज का उत्पादन कर रही हूँ बल्कि अपनी खेती की लागत आधे तक कम हो रही है। इन खादों के प्रयोग से जहाँ मिट्टी उपजाऊ हो रही है, वहीं इनका खानपान बेहतर हो रहा है। सविता ने कहा कि वर्तमान में खेती मुख्यतः विदेशों से आयातित कृषि रसायनों पर आधारित है। परिणामस्वरूप खेती निरंतर महंगी, विषाक्त तथा जल एवं वातावरण प्रदूषण की समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। सवित्री व रीटा ने बताया कि कृषि विभाग बंगाणा के कर्मचारी का उसे सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती करने में भरपूर सहयोग मिल रहा है। प्राकृतिक खेती करने पर सवित्री व रीटा ने रोंगी,सोयाबीन प्याज, गोभी, शिमला मिर्च, भिंडी, खीरा, लाल मिर्च, लौकी, घीया, कद्दू, बैंगन, उड़द, मक्की,गेंहू समेत अन्य सब्जियों व आनाज का उगाया है। सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती खेती कर सब्जी उत्पादन में अहम मुकाम हासिल किया है।

प्राकृतिक खेती खेती को दिया जा रहा बढ़ावाः डॉ. सतपाल धीमान

कृषि विभाग बंगाणा के विषयवाद विशेषज्ञ डॉ. सतपाल धीमान ने बताया कि समय-समय पर क्षेत्र के किसानों को प्रशिक्षण दिया जाता है। कुछ किसानों ने कृषि को अपनाकर लाखो रुपये कमाने शुरू कर दिए हैं। सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
2.5 बीघा	खीरा, गोभी ,टमाटर,लहसुन, मटर	45000	150000	105000	25000	160000	135000

सहायक प्राध्यापक की नौकरी छोड़ अपनाई प्राकृतिक खेती

मनजीत सिंह
गांव : सिहाना
ग्राम पंचायत : सिहाना
विकास खंड : बंगाणा
दूरभाष संख्या : 7018875418
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

जिला ऊना के विकास खंड बंगाणा की पंचायत सिहाना से संबंध रखने वाले मनजीत सिंह के खेत प्राकृतिक कर रहे किसानों के लिए आदर्श बनकर उभरे हैं। गाँव सिहाना के मनजीत सिंह जी एक शिक्षण संस्थान में सहायक प्राध्यापक की सेवा छोड़कर अपने गाँव लौट आए तथा खेती को अपना व्यवसाय बनाया।

प्रांरभिक स्तर पर उन्होंने रासायनिक खेती से आंरभ की परन्तु रासायनिक खेती में बढ़ते व्यय, घटती आय, मानव व पर्यावरण पर पड़ते दुष्प्रभावों ने उन्हें सोच में डाल दिया। इसी बीच उन्होंने आतमा परियोजना के तहत 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के कृषि विश्व विद्यालय पालमपुर में लगे प्रशिक्षण-शिविर में भाग लिया। इसके बाद वह निंरतर इस खेती से जुड़ गए और अच्छे परिणाम व सफल उत्पादन पाकर इस विधि के प्रति आस पास के लोगों को भी जागरुक किया। मनजीत जी के पास देसी गाय नहीं है लेकिन वह गांव से गोबर-गौमूत्र लाकर स्वयं घर पर ही जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निस्त्र, दशपर्णी अर्क व सप्तधान्याकुर अर्क तैयार करते है।

''मैंने पौष्टिक खानपान की कमी महसूस की, अच्छी गुणवत्ता, पौष्टिक उत्पाद, सकारात्मक सोच व पर्यावरण के बचाव के लिए प्राकृतिक खेती आवश्यक है। मेरे खेत से प्राकृतिक उत्पादों की मांग दिल्ली तक पहुंच गई है और मुझे इसका आर्थिक रुप से बहुत लाभ हुआ है।''

मनजीत सिंह मानते हैं कि उनके सामने ग्राहक तक पहुंचना व उत्पाद के प्रति विश्वास बनाना बड़ी चुनौती थी, परन्तु उत्पाद की गुणवत्ता व ग्राहक सेवा ने उनका यह काम कर दिया। जहरमुक्त व उच्च गुणवत्ता के उत्पाद अब उनके खेतों से ही बिकने लगे हैं।

मनजीत जी सभी किसानों से आह्वान करते हैं कि रासायनिक खेती में प्रयोग हो रहे कीटनाशकों के दुष्प्रभाव चारों और देखने को मिल रहे हैं और खेती में इनके अंधाधुध हो रहे प्रयोग एवं बढ़ते खर्चों से किसान भी बहुत दुखी हैं। प्राकृतिक खेती अपनाकर हम सभी अपनी भूमि को स्वास्थय सुधार कर अगली पीढ़ी के लिए एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

''रासायनिक खेती में खाद-कीटनाशक आदि का खर्च अधिक और फसल में मुनाफा बेहद कम है। वहीं प्राकृतिक खेती में लागत बहुत न्यून तथा उत्पादन अधिक है। मेरी देखा-देखी में आस-पड़ोस के किसान भी इस खेती के प्रति रुचि ले रहे हैं, तथा दूर-दराज के किसान, पाठशालाओं में पढ़ने वाले छात्र/छात्राऐं आए दिन मेरे खेतों में पहुंच कर जानकारी प्राप्त करते हैं।

स्कूली छात्राओं व अन्य जिला व खण्ड के किसानों का मनजीत जी के खेत में भ्रमण कार्यक्रम

प्राकृतिक उत्पादों के साथ मनजीत जी

कृषि | प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर बनकर दूसरे किसानों को भी कला सिखा रहे

प्राकृतिक खेती कर प्रेरणास्रोत बने मनजीत

संवाद सहयोगी, ऊना : बंगाणा के सिहाणा गांव के प्रगतिशील किसान मनजीत सिंह ने प्राकृतिक तकनीक से कृषि करके सभी किसानों के समक्ष मिसाल पेश है। उन्होंने पॉलीहाउस में ब्रोकली फसल से न केवल कमाई की बल्कि अन्य किसानों को भी प्रशिक्षित कर रहे हैं। मंजीत वर्ष 2016 से पॉलीहाउस संचालित कर रहे हैं, वर्ष 2018 में उन्होंने प्राकृतिक खेती शुरू की। कृषि विभाग के किसान प्रशिक्षण शिविरों का लाभ लिया। तकनीक के तमाम गुर सीखने के बाद न केवल प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर बने बल्कि उन्नत खेती की कला दूसरे किसानों को भी सिखा रहे हैं।

मनजीत सिंह ने सबसे पहले नौणी में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगाया। उसके बाद पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय में छह दिन तक डा. सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के गुर सीखे। अब अपने पॉलीहाउस में ब्रोकली के 2,500 पौधे लगाए हैं, जिनसे अच्छी कमाई हो रही है।

प्राकृतिक खेती से उगाई गई ब्रोकली को दिखाते मनजीत • जागरण

वर्षा जल संग्रहण बन रहा माध्यम

खेती की लागत को कम करने के लिए वह वर्षा जल संग्रहण के माध्यम से सिंचाई करते हैं। वह घर की छत से बरसाती पानी को एकत्रित कर उसे टैंक तक पहुंचाते हैं। यह टैंक कुछ ऊंचाई पर बनाया गया है, ताकि पॉलीहाउस तक बिना किसी खर्च के पानी आसानी से पहुंच जाए। पॉलीहाउस लगाने तथा ड्रिप इरिगेशन के लिए 85 प्रतिशत तक अनुदान मिला। पानी का टैंक बनाने के लिए विभाग ने 70 हजार रुपये का अनुदान दिया। पंचायत ने वर्षा जल संग्रहण तथा टैंक के लिए एक लाख रुपये का अनुदान दिया। प्रोत्साहन के लिए

"प्राकृतिक खेती के लिए हर किसान तक पहुंचने का लक्ष्य रखा है। राज्य में बीते वर्ष 30 नवंबर तक 2957 पंचायतों के कुल 96,051 किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रशिक्षित किया जा चुका था। अब 90,349 किसान 5,095 हेक्टेयर भूमि पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। चालू वित्त वर्ष में 50,000 नए किसानों को कवर किया जाएगा।

-वीरेंद्र कंवर, कृषि मंत्री

यह मिलती है मदद

आत्मा परियोजना के निदेशक डा. आरएस कंवर ने कहा कि प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत प्रदेश सरकार क्षमता निर्माण पर ध्यान केंद्रित कर रही है। प्राकृतिक खेती और ट्रेनिंग के लिए सरकार आर्थिक मदद देती है। कम से कम छह माह की अवधि से प्राकृतिक खेती कर रहे किसान को देसी गाय की खरीद पर 50 प्रतिशत या अधिकतम 25 हजार रुपये की मदद दी जाती है। प्लास्टिक के तीन ड्रम खरीदने पर 75 प्रतिशत या अधिकतम 750 रुपये प्रति ड्रम आर्थिक सहायता, गोशाला में लाइनिंग के लिए 80 प्रतिशत या आठ हजार रुपये का अनुदान एवं संसाधन भंडार बनाने के लिए 10 हजार रुपये की आर्थिक सहायता दी जाती है।

मनजीत ने मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर का धन्यवाद किया है।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
4 बीघा	गोभी, खीरा,ब्रोकली,मटर टमाटर	55000	224000	169000	35000	240000	205000

प्रयोग के तौर पर शुरु की थी प्राकृतिक खेती, आज उगा रहे हैं हर तरह की फसलें

सावित्री देवी
गांव : छपरोह कलां
ग्राम पंचायत : छपरोह
विकास खण्ड : बंगाणा
दूरभाष संख्या : 9805036468
ग्राम पंचायत छपरोह में दो दिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त।

जिला ऊना के विकास खंड-बंगाणा के रहने वाले सावित्री देवी सेवानिवृत अध्यापिका है, गाँव में अपने पुरखों की जमीन पर कई वर्षो से पारम्परिक रासायनिक खेती करते-करते हर वर्ष फसल उत्पादन के उतार चढ़ाव एवं लगातार रासायनिक दवाईयों के बढ़ते प्रयोग से तंग आ चुकी थी और रासायनिक कृषि का विकल्प ढूंढ रहे थे। इंटरनेट पर खोजबीन करते हुए उन्हें प्राकृतिक खेती विधि के बारे में पता चला जिसके लिए उन्होंने आतमा अधिकारियों से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण लिया जिसके बाद उन्होंने समर्पित रुप से प्राकृतिक खेती को अपना लिया।

शुरुआती ट्रायल में इन्होंने सब्जियाँ जहरमुक्त तरीके से उगाई थीं, आज वह अपने 5 बीघा में इस विधि से सफल उत्पादन कर रहे हैं। इन्होंने अपने खेतों में गेहूं, चना, सरसों, अदरक, लहसुन, गन्ना, हल्दी आदि फसलें लगाई हैं। सावित्री जी के लहलहाते खेत अब क्षेत्र के अन्य किसानों को जहां आकर्षित कर रहे हैं, वहीं प्राकृतिक खेती सीखने वाले किसानों के लिए प्रशिक्षण स्थल बन गए हैं।

''मैंने इंटरनेट पर मौजूद जानकारी पढ़कर व यू-ट्यूब पर विडियो देखकर अपने खेतों में प्राकृतिक खेती विधि का ट्रायल करना शुरु कर दिया, जिसके मुझे संतोषजनक परिणाम मिले। अपने निजी अनुभव से वह कहती हैं कि मुझे इस विधि की सबसे खास व अच्छी बात जहरमुक्त उत्पादन लगी। रासायनिक उर्वरकों व जहरीले कीटनाशकों के उपयोग से लागत मूल्य में वृद्धि व मिट्टी पर बुरा असर पड़ रहा था, परन्तु इस विधि के अपनाने के बाद लागत मूल्य लगभग न्यून हो गया है। देसी गोबर व गौमूत्र से मैं सूखी खाद व अन्य आदान अपने घर पर ही तैयार करती हूँ।''

परिवार के साथ माश की फसल दिखाते हुए

गेहूँ+चना की बिजाई करवाते हुए

प्राकृतिक खेती से आर्थिकी सुदृढ़ कर रहीं सावित्री देवी

संवाद न्यूज एजेंसी

लठियाणी की सेवानिवृत्त अध्यापिका लोगों के लिए भी बनीं प्रेरणास्रोत

जोल (ऊना)। लठियाणी की सेवानिवृत्त अध्यापिका सावित्री देवी लोगों को रासायनिक खेती से दूर रहकर प्राकृतिक खेती करने के लिए प्रेरित कर रही है।

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जहां खेती की लागत कम हुई तो वहीं उन्हें इसका आर्थिक रूप से भी फायदा मिल रहा है। उन्होंने बताया कि आतमा परियोजना के तहत सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का उन्होंने प्रशिक्षण हासिल किया। इसमें उन्हें पता चला कि रासायनिक खेती से हमारी भूमि को कितना नुकसान पहुंचा है। इसके बाद उन्होंने प्राकृतिक तरीके से खेतीबाड़ी करने का फैसला लिया। इसमें सफलता हासिल करके बाद अब वह इस विधि के प्रति आसपास के लोगों को भी जागरूक कर रही हैं। उन्होंने बताया कि सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती में जीवामृत और घन जीवामृत जैसी खादों का प्रयोग कर बेहतर खेती की जा सकती है। किसान सावित्री देवी ने बताया कि वह अपने घर पर ही खाद और कीटनाशक दवाइयां तैयार करती हैं। इसमें लागत सिर्फ शून्य आती है। इन तरीकों को अपनाकर न सिर्फ शुद्ध अनाज का उत्पादन कर रही हैं बल्कि उनकी खेती की लागत आधे से भी कम हो रही है। प्राकृतिक खेती करने पर सावित्री देवी ने रौंगी, माश, अदरक, सोयाबीन, अरबी, हल्दी, मक्की, चना, प्याज, शलगम और मूली की फसलें लगाई है। कृषि विभाग बंगाणा के विषयवाद विशेषज्ञ डॉ. सतपाल धीमान ने बताया कि समय-समय पर क्षेत्र के किसानों को प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कई किसानों ने इस विधि को अपनाकर लाखों रुपए कमाने शुरू कर दिए हैं

बीजामृत के साथ बीज संस्कारित करते हुए

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	गेहूं,चना, अदरक, सोयाबीन, मक्की, हल्दी	26000	95000	69000	12000	90000	78000

प्राकृतिक खेती बनी वरदान बंजर भूमि में भी आई जान

कुलदीप सिंह
गांव : डंगोह
ग्राम पंचायत : डंगोह खास
विकास खण्ड : गगरेट
दूरभाष संख्या : 94185-38622
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

गगरेट विकास खण्ड के गाँव डंगोह के श्री कुलदीप सिंह जी एक बहुत मेहनती किसान हैं। अपनी 35-40 कनाल भूमि पर वह गेहूं व मक्की की रासायनिक खेती करते थे जिससे उनका खर्चा काफी बढ़ जाता था और आमदनी बेहद कम थी। इसी परेशानी का विकल्प वह काफी समय से ढूढ़ रहे थे।

रेडियो पर आने वाले प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के विज्ञापन को सुनने के बाद उन्होंने अपने क्षेत्र के आतमा अधिकारियों से संपर्क किया जिन्होंने उन्हें सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में साहित्य पढ़ने का दिया। इसके बाद उन्होंने पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित छः दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में पद्म श्री सुभाष पालेकर जी से इस आध्यात्मिक खेती का प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें उन्होंने देसी गाँव के गोबर व गौमूत्र में कम खर्चे में बनने वाले घटकों व रोगनाशी दवाओं के बनाने व उपयोग विधि के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

''जहरीले रसायनों के दुष्प्रभावों व प्राकृतिक खेती के फायदों को देखकर मैंने जहर से पीछा छुड़ाने की ठान ली थी और प्रशिक्षण के बाद सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती पद्धति को ही अपनी खेती का आधार बनाया। इस वर्ष मैंने रबी में प्राकृतिक तरीके से 4 बीघे में गेहूँ व मटर की मिश्रित खेती की थी जिसमें मुझे अच्छे परिणाम मिले। पहले रासायनिक खेती से उत्पादित गेहूँ में 16,000 रुपये प्रति 4 बीघा खर्चा हो जाता था व इतने परिश्रम के बाद भी 14 क्विंटल उत्पादन से 9200 रुपये/4 बीघा आमदन हो पाती थी, परन्तु सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि अपनाने के बाद 4 बीघे में 4000 रुपये खर्च कर 16 क्विंटल उत्पादन पाया जिससे 24,800 रुपये की शुद्ध आमदन प्राप्त हुई।''

सुरक्षात्मक प्रणाली के तहत उन्होंने पॉलीहाऊस में भी देसी तरीकों से सब्जियों की पनीरी तैयार कर अपनी आय को बढ़ाया है। पॉलीहाऊस में वह खीरा, टमाटर,शिमला मिर्च, धनिया आदि की व्यावसायिक खेती कर रहे हैं साथ ही गाँव के अन्य किसानों का भी मार्गदर्शन कर रहे हैं जिससे उनका रुझान भी प्राकृतिक खेती की तरफ बढ़ गया है।

परिवार के साथ कुलदीप सिंह

प्याज की फसल दिखाते हुए

नंगल जरियालां : डंगोह गांव का किसान कुलदीप सिंह जैविक रूप से तैयार की गई फसल को दिखाता हुआ। (दीपक)

किसानों का प्राकृतिक खेती की तरफ बढ़ा रुझान

नंगल जरियालां, 21 अक्तूबर (दीपक): गगरेट विधानसभा क्षेत्र के गांवों में किसानों का रुझान प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ता जा रहा है। डंगोह खास के किसान कुलदीप सिंह ने बताया कि उन्होंने आतमा परियोजना के अंतर्गत 6 दिन का प्रशिक्षण लिया था जिसने उनकी जिंदगी बदल दी। इस प्रशिक्षण के बाद उन्होंने गोभी, मटर, लहसुन, पालक व चुकंदर इत्यादि सब्जियां प्राकृतिक तरीके से उगाई जबकि इसी तरह मक्की की फसल में हाथ आजमाया।

उन्होंने बताया कि बम्पर फसल होने से न केवल उनकी आर्थिकी सुधरी, साथ ही उनका परिवार एवं अन्य लोग जहरीली सब्जियों के सेवन से भी बच गए।

नंगल जरियालां : भंजाल गांव का किसान यशपाल सिंह अपनी फसल के साथ। (दीपक)

इसी कड़ी में भंजाल गांव के किसान यशपाल सिंह ने बताया कि वह 3 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

लहसुन, प्याज, चुकंदर, मूली, शलगम व रबी की फसल का सीजन उनकी आय का प्रमुख जरिया बना हुआ है जबकि देसी गाय का भी पालन वह कर रहे हैं। इसके अलावा दियोली के संतोष कुमार भी प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
14 बीघा	मटर, गेहूँ, चना, मक ी+माश+भिण्डी ,लहसुन, प्याज, अदरक, हल्दी, पालक, करेला	70,000	2,50,000	1,80000	25000	225000	200000

प्राकृतिक खेती से घटा जंगली पशुओं का प्रकोप

संतोष कुमार
गांव : दियोली
ग्राम पंचायत : दियोली
विकास खण्ड : गगरेट
दूरभाष संख्या : 8627004360

आतमा अधिकारियों द्वारा 2 दिवसीय प्रशिक्षिण शिविर प्राप्त।

गगरेट विकास खण्ड के दियोली गांव के संतोष कुमार जी बहुत ही मेहनती किसान हैं। कृषि पृष्ठभूमि से जुड़े संतोष जी 20 वर्षों से 10 कनाल जमीन में गेहूँ व मक्की की रसायनिक खेती करते थे। खेती में बढ़ती लागत व अवारा पशुओं के प्रकोप व कम होती उत्पादन से यह बहुत परेशान थे।

इंटरनेट पर रसायनिक खेती की विकल्प ढूंढ़ते हुए इन्हें सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का पता चला, जिसके बारे में अधिक जानकारी के लिए वे अपने खण्ड के आतमा अधिकारियों के पास गए। संयोग से अगले ही दिन उनके गाँव में ही आतमा अधिकारियों द्वारा 2 दिवसीय प्रशिक्षिण शिविर का आयोजन किया जा रहा था। इसके बाद इन्होंने 2 दिन का प्रशिक्षण प्राप्त कर देसी गाय के गोबर व गौमूत्र से कम लागत में बनने वाले विभिन्न घटकों जैसे जीवामृत, दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र आदि बना कर अपने खेतों में उपयोग करना शुरु कर दिया। अच्छे परिणाम मिलने पर संतोष जी का रुझान इस खेती की तरफ बढ़ता ही गया।

संतोष जी ने अपने खेत में खरीफ़ के मौसम में मक्की की बिजाई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के तहत ही की, जिसमें मक्की को उचित दूरी में मेढ़ों पर लगाकर, दलहन फसल मूंग व माश को सहफसल के रुप में लगाया। इसके साथ ही उन्होंने सब्जियां जैसे-घीया, लौकी, तोरी, बैंगन आदि भी बीन्स व रौंगी सह फसल के रुप में लगाई।

''मैंने इस सब फसलों को बिजाई से पूर्व बीजामृत से उपचार किया था व समय-समय पर जीवामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र का प्रयोग किया। आच्छादन के प्रयोग से खेत में नमी बनी रही व खरपतवार का प्रकोप भी कम देखने को मिला। मैनें पाया कि मेरे खेतों में फसलों की सेहत भी पड़ोसियों की रासायनिक फसलों की तुलना में बेहतर थी, व कीटों का प्रकोप भी काफी कम था। थोड़ी सी बिमारी लगने पर खट्टी लस्सी के छिड़काव से फसलें स्वस्थ हो गईं थीं।''

इनका कहना है कि आवारा पशु जो आए दिन इनकी फसलों को खा जाते थे, वे भी अब खेत में बिल्कुल नहीं आते। इन सब लाभदायक परिणामों से संतोष जी काफी खुश हैं व दूसरे किसानों को भी प्राकृतिक खेती के बारे में बताते हैं जिसके परिणामस्वरुप दूसरे किसान भी सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती से जुड़ने लग गए हैं।

मक्की+माश+तिल का मिश्रित मॉडल दिखाते हुए

परिवार के साथ संतोष कुमार

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	गेहूं,चना,माश, तिल,मक्की,मटर, घीया,कद्दू,लौकी	70000	1,90,000	1,20,000	12000	1,32000	120000

परिवार से लड़कर शुरु की प्राकृतिक खेती, आज सब मिलकर उगा रहें है प्राकृतिक उत्पादन

संकेत कुमार
गांव : मावां सिंधियां
ग्राम पंचायत : भंजाल
विकास खण्ड : गगरेट
दूरभाष संख्या : 9816341160
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

विकास खण्ड गगरेट के भंजाल गांव के लघु व सीमान्त किसान श्री संकेत कुमार जी ने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के तहत गेहूँ, मटर व चने की मिश्रित खेती का सफल उत्पादन कर पूरे गांव में उदाहरण स्थापित किया।

स्नातक होने पर भी उन्होंने नौकरी छोड़कर कृषि को अपनाया जिसके लिए उन्हें घरवालों का विरोध भी सहना पड़ा।

कृषि विभाग के अधिकारियों तथा खण्ड तकनीकी दल के सदस्यों के संपर्क में आने के बाद उन्होंने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में जाना और पालमपुर में आयोजित छः दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में पद्म श्री सुभाष पालेकर जी से प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसके बाद उन्होंने अपनी आय प्राकृतिक खेती से दोगुनी करने का निश्चय किया।

इसके बाद इन्होंने सबसे पहले साहीवाल नस्ल की एक गाय खरीदी, जिससे वह सब्जियों व गेहूँ के उत्पादन के लिए आदान बनाते हैं। वह मुख्य फसल के साथ बोई जाने वाली दलहनी सह फसलों, आच्छादन, मित्र जीवाणुओं की वृद्धि करने वाले बीजामृत से बीज संस्कार, जीवामृत, घनजीवामृत व अन्य कीटनाशी अस्त्रों के उपयोग को बारीकी से समझते हैं और इन बिन्दुओं को ध्यान में रखकर खेती करते हैं।

''प्राकृतिक खेती से आर्थिकी में सुधार होने की वजह से अब परिवार वाले भी संतुष्ट हैं और वे भी अब पूरा सहयोग देते हैं। प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद मैं गुणवत्ता से परिपूर्ण जहरमुक्त फसलों का आनंद स्वंय तो ले ही रहा हूं, साथ-साथ आसपास के लोगों को भी इस विधि को अपनाने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ।''

यशपाल जी फूलगोभी, टमाटर, प्याज, लहसुन, पपीते की खेती कर एक शानदार आय अर्जित कर रहे हैं। प्राकृतिक खेती का निर्णय सुढ़ढ़ होने के साथ-साथ कठिन परिश्रम से गेहूं के उत्पादन में भी इन्होंने सफलता हासिल की है। साथ ही गाँव में जहरमुक्त भोजन और खेती के माध्यम से अपने व धरती पर उपस्थित सभी जीवों के कल्याणकारी भविष्य के लिए बीज बो रहे हैं। गांव के बाकी कृषक उन्हें अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, व इनसे कृषि संबंधी जानकारियां लेते रहते हैं।

मक्की+माश+तिल का मिश्रित मॉडल दिखाते हुए

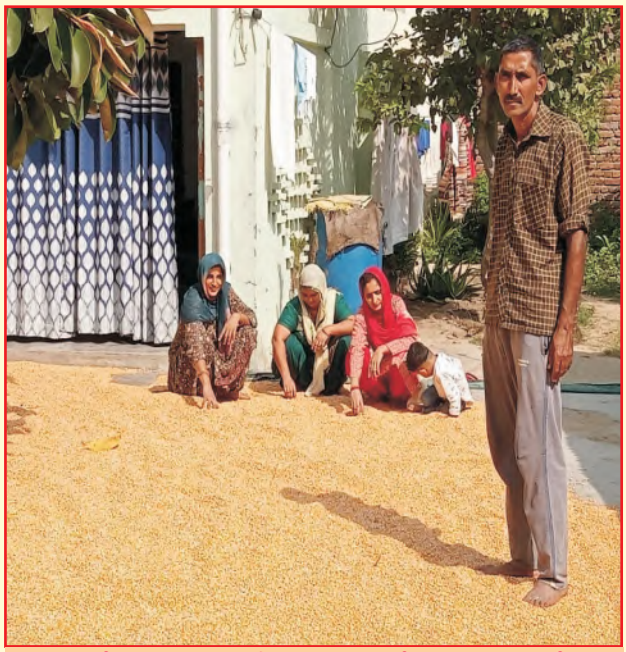

परिवार के साथ मक्की भण्डारण के लिए सुखाते हुए

प्राकृतिक खेती से हो रही अधिक पैदावार

मुबारिकपुर, 23 अक्तूबर (केहर): विकास खंड गगरेट के गांव मवा सिंधिया निवासी किसान सकेत कुमार और विकास खंड गगरेट के गांव दियोली के किसान संतोष कुमार कृषि विभाग गगरेट आतमा प्रोजैक्ट के अंतर्गत सुभाष पालेकर प्रशिक्षण केंद्र सोलन में प्रशिक्षण लेकर अपने गांव में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। इन किसानों ने बताया कि प्राकृतिक खेती करके जहर मुक्त अनाज पैदा कर सकते हैं और कम लागत में अधिक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। किसान सकेत कुमार ने बताया कि गांव में उगाई सब्जियां बाजार में अच्छे दामों में बिक रही हैं।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
5 बीघा	मटर, गेहूँ, चना, घिया, कद्दू, माश,तिल, मक्की	70,000	1,20000	50,000	40000	1,40,000	1,00,000

कोरोना काल में भी कमाई कृषि से दोगुनी आय

तीर्थ राम
गांव : छत्तरपुर ढ़ाडा
ग्राम पंचायत : छत्तरपुर
विकास खण्ड : हरोली
दूरभाष संख्या- 8894416369
नौणी विश्वविद्यालय में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

जिला ऊना की ग्राम पंचायत छत्तरपुर ढ़ाडा के रहने वाले तीर्थ राम जी अपने पास कृषि योग्य भूमि कम होने के बावजूद 6 बीघा पट्टे पर भूमि लेकर सब्जियों की खेती करते है। कई वर्षों से रसायनिक खेती में बढ़ रही कृषि लागत व रसायनों के खर्चें में घटती आय से परेशान हो चुके थे।

इसी बीच आतमा परियोजना अधिकारियों के सम्पर्क में आने के बाद उन्हें पद्मश्री सुभाष पालेकर जी के नौणी विश्वविद्यालय में लगे छः दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण से लौटने के बाद इन्होंने पालेकर जी द्वारा बताई गई विधि से खेती करनी शुरु कर दी। जिसके घटक बनाने के लिए लगभग 7-8 किलो मीटर दूर गौशाला से देसी गाय का गोबर व गौमूत्र लाते थे।

इस विधि से उन्होंने खीरा, गोभी, मटर, पालक, चुकन्दर की खेती से लगभग 1 लाख तक की आमदनी प्राप्त की, जिसमें उनका खर्चा नाममात्र ही रहा।

''कोरोना काल होने के बावजूद मेरे काम पर कोई असर नहीं पड़ा बल्कि जो लोग सब्जी मण्डी से सब्जी खरीदते थे वह भी बीमारी के भय से मेरे घर से ही सब्जियां लेकर जाते थे। इससे जो भी उपज होती थी, वह घर से ही बिक जाती थी। इसी कारण सब्जी मण्डी में भी मेरी अलग पहचान बन चुकी है।''

तीर्थ राम जी बताते है इस खेती में न केवल उनके आसपास के किसान जुड़ रहे है बल्कि उनका गांव पंजाब के नज़दीक होने के कारण पंजाब के किसान भी उनसे प्रेरित होकर इस प्राकृतिक खेती की पद्धति को अपना रहे हैं, जिनमें से बहुत से लोग उनके दोस्त व रिश्तेदार हैं।

हल्दी व बंद गोभी की फसल दिखाते हुए तीर्थ राम

परिवार के साथ

तीर्थ राम ने प्राकृतिक खेती अपना दुगनी की आय

संतोषगढ़। उपमंडल ऊना के तहत गांव छतरपुर ढाडा के किसान तीर्थ राम प्राकृतिक खेती को अपनाकर अपनी आय को दुगना किया है। रसायनिक खादों व कीटनाशकों के बढ़ते इस्तेमाल और दुष्प्रभावों से परेशान तीर्थ राम को सोलन नौनी विवि में प्राकृतिक खेती के अंतर्गत पदम श्री सुभाष पालेकर जी से 6 दिन का प्रशिक्षण मिला। तीर्थ राम बताते हैं प्रशिक्षण से लौटने के बाद उन्होंने प्राकृतिक खेती की विधि द्वारा सब्जियों में गोभी, मटर, टमाटर, पालक व चुकंदर की सफल खेती शुरू की। जीवामृत व घनजीवमृत के प्रयोग से फसल काफी अच्छी हुई, जिसमें उनकी फसल लागत कम हुई, दूसरी तरफ उनको डेढ़ गुना तक मुनाफा मिला। ग्रीष्म काल में कद्दू, घीया, करेला, फ्रांसबीन व खरबूजे की फसल में लगभग एक लाख तक का मुनाफा कमाया।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
6 बीघा	गोभी,खीरा,करेला, घीया,कद्दू,पालक, टमाटर,मटर, हल्दी	75,000	2,40,000	1,65,000	30,000	2,70,000	2,40,000

प्राकृतिक खेती बनकर आई मानव व प्रकृति के लिए वरदान

रमन कुमार
गांव : भदसाली हार
ग्राम पंचायत : भदसाली हार
विकास खण्ड : हरोली
दूरभाष संख्या : 7018802563
कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

विकास खण्ड हरोली के गाँव भदसाली हार के किसान श्री रमन कुमार पिछले कई वर्षों से रसायनिक खेती कर रहे थे जिसमें रमन जी अपने खेतों में जहरयुक्त यूरिया, रासायनिक कीटनाशकों व खरपतवार नाशकों का उपयोग भारी मात्रा में करते थे। घटती आय व कीटनाशकों के स्वास्थ्य पर पड़ते दुष्प्रभावों को देखते हुए वह कृषि छोड़कर अन्य व्यवसाय तलाशने का मन बना चुके थे।

अख़बार में प्राकृतिक खेती के शिविर के बारे में पढ़कर इन्होंने खण्ड तकनीकी दल से सम्पर्क किया, जहां से इन्हें 2018 में पालमपुर कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित पदमश्री सुभाष पालेकर जी के 6 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भेजा गया। शिविर में प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त कर रमन जी ने प्राकृतिक खेती से ही फसलें उगाने का संकल्प लिया।

रमन जी कहते हैं जहाँ पहले मुझे सब्जी मंडी में जाकर सब्जियाँ बेचनी पड़ती थी, अब लोग खेतों से ही खरीदकर घर ले जाते हैं मैंने लगभग 12 बीघा कृषि योग्य भूमि प्राकृतिक खेती के अंतर्गत प्रयोग में ला दी है। रमन जी के अनुभव के आधार पर वह कहते हैं कि प्राकृतिक खेती- मानव व प्रकृति के लिए वरदान है। यह पर्यावरण हितैषी व आय में वृद्धि करने वाली कम लागत वाली खेती है।

पिछले साल भी रमन जी ने अपने खेतों में प्राकृतिक तरीके से बैंगन, गोभी, प्याज व मिर्च की पौध तैयार की थी और भारी मुनाफा कमाया। मुख्य फसलों के साथ सहफसलें -गेहूं के साथ चने व सरसों, फूलगोभी के साथ मटर, मक्की के साथ माह व तिल की फसल से अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की।

''प्राकृतिक खेती की आध्यात्मिक विधि से मैंने देसी मक्की, गोभी, बंसी गेहूं, प्याज़, अरबी, लहसुन, मटर परीक्षण के तौर पर लगाया, जिसके परिणामों से मैं अत्यंत प्रभावित हूँ। प्राकृतिक खेती में उपयोग होने वाली घटकों व आच्छादन के प्रयोग से भूमि में खेती में काफी सुधार हुआ है, बीजामृत से संस्कारित बीज का स्वास्थय भी दूसरें बीजों की तुलना में काफी अच्छा था।'' मैंने 2 कनाल पौध से लगभग 60,000 रुपये मुनाफा कमाया।''

केले की प्राकृतिक फसल दिखाते हुए

परिवार के साथ रमन कुमार

प्राकृतिक खेती को अपनाने से भदसाली के रमन का बढ़ा मुनाफा

हरोली। खेतों में खड़े रमन कुमार व अन्य।

हरोली। विधानसभा हरोली के गांव भदसाली के किसान रमन कुमार क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरक बने हुए हैं। वर्षों से सब्जियों की खेती कर रहे रमन कुमार ने आत्मा परियोजना के तहत 6 दिन का प्रशिक्षण लिया और तब से प्राकृतिक खेती विधि से सब्जियों उगाने की खेती शुरू कर दी। मौजूदा समय में रमन कुमार करीब 13 बीघा जमीन पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। रमन कुमार सब्जियों में गोभी, मटर, प्याज, लहसुन, चुकंदर, पालक व घंडियाली इत्यादि की सफल खेती कर रहे हैं, जिनसे रसायनिक खेती के मुकाबले लागत कम हुई है। उनका मुनाफा भी दोगुना तक बढ़ गया है। आत्मा परियोजना के खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा ने बताया कि रमन कुमार 2018 से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं और किसी भी प्रकार की खाद और रसायनिक दवाइयों का प्रयोग नहीं करते हैं। इनसे प्रेरित होकर आसपास के किसान भी इस खेती कि इस विधि को अपना रहे हैं।

प्राकृतिक खेती अपनाने से बढ़ा डेढ़ गुना मुनाफा : रमन कुमार

संवाद न्यूज एजेंसी

हरोली (ऊना)। विधानसभा हरोली के गांव भदसाली के किसान रमन कुमार अपने आसपास के क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरक बने हुए हैं। वर्षों से सब्जियों की खेती कर रहे रमन कुमार रासायनिक खेती में घटती उपज और बढ़ते खर्चों का विकल्प तलाश रहे थे। इस बीच उन्होंने प्राकृतिक खेती को अपनाया।

2018 में आत्मा परियोजना के तहत छह दिन का प्रशिक्षण लिया। इसके बाद प्राकृतिक खेती विधि से सब्जियों को उगाने की खेती शुरू की। वर्तमान में वह लगभग 13 बीघा जमीन पर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। रमन कुमार ने बताया कि वह सब्जियों में गोभी, मटर, प्याज, लहसुन, चुकंदर, पालक, घंडियाली इत्यादि की सफल खेती कर रहे हैं जिनसे उनको रासायनिक खेती के मुकाबले यहां लागत कम हुई है। वहीं, उनका मुनाफा डेढ़ गुना तक बढ़ गया है। आत्मा परियोजना के खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा ने बताया कि रमन कुमार 2018 से सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती कर रहे हैं।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
12 बीघा	मटर, गेहूं, चना, सरसों,लहसुन, प्याज़,भिण्ड़ी, मक्की,माश,तिल, गण्डियाली, गोभी, गन्ना	1,95,000	3,95,000	2,00,000	1,10,000	4,57,000	3,47,000

सारी कृषि योग्य भूमि को प्राकृतिक खेती में बदल डाला

विजय कुमार
गांव : हरोली
ग्राम पंचायत : हरोली
विकास खण्ड : हरोली
दूरभाष संख्या : 89880-03215
बढ़ेड़ा गांव में दो दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

विकास खण्ड हरोली के विजय कुमार वर्षों से रासायनिक खेती से होने वाले भारी-भरकम खर्चे और कीटनाशकों एवं रसायनों के अत्याधिक प्रयोग में होने वाले सेहत के नुक्सान को लेकर बहुत परेशान थे।

इसी बीच उन्होंने अपने गाँव में आतमा अधिकारियों के दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। इसके बाद से उन्होंने शुरुआत के लिए 2 बीघा में मक्की व माह की खेती की, जिसमें उन्हांने बढ़िया उत्पादन व जहरमुक्त फसल मिली। उसके उपरान्त विजय जी अब अपनी पूर्ण कृषि योग्य भूमि पर सफलतापूर्वक सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती विधि से खेती कर रहे हैं।

पिछले वर्ष इन्होंने प्राकृतिक खेती से लगभग 2 लाख रुपये कमाए हैं जबकि रासायनिक खेती में होने वाले खर्चों को भी पूरी तरह से तिलाजंली दे दी है। प्राकृतिक खेती में घर में तैयार होने वाले आदानों के प्रयोग से अब उन्हें किसी भी प्रकार की एलर्जी भी नहीं है। विजय जी बताते हैं कि उनके खेतों में उगने वाली सब्जियों को कई लोग उनके पास आकर खेत से ही खरीद रहे हैं। प्राकृतिक खेती के इस सफल किसान की देखा-देखी में इस क्षेत्र के अन्य 40 किसान भी उनके साथ इस रसायनमुक्त अभियान से जुड़ गए हैं।

''मैं अपनी 27 बीघा भूमि पर प्राकृतिक खेती कर हूँ और मुझे खुशी है कि मैं न केवल परिवार को और न ही अपने किसी ग्राहक को जहरमुक्त उत्पाद खिला व बेच रहा हूँ। मेरे खेत में इस विधि से उत्पादन में कोई भी कमी नहीं आई है बल्कि लागत मूल्य घट गया है।''

परिवार के साथ विजय

धान की फसल दिखाते हुए

जीवामृत का प्रयोग करते हुए

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
27 बीघा	धान,मक्की,माह, गेहूं, चना, सरसों, लहसुन	1,58,000	4,31,250	273250	105000	462750	357750

पॉलीहाउस में प्राकृतिक खेती कर बढ़ाया मुनाफा

सुरेश चंद
गांव : सुरजेड़ा
ग्राम पंचायत : झम्बर
विकास खण्ड : ऊना
दूरभाष संख्या : 7876342301

नौणी विश्वविद्यालय में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

ऊना विकास खण्ड के गांव सुरजेड़ा पंचायत झम्बर के सुरेश चंद जी बहुत ही मेहनती किसान हैं। रासायनिक खेती की अधिक दुष्प्रभाव होने के कारण पिछले वर्षों से वह जैविक खेती कर रहे थे, लेकिन बढ़ते खर्चे और जंगली पशुओं से परेशान होकर उन्होंने 2018 में 1000 वर्ग मीटर का पॉलीहाउस लगवाया और उसमें संरक्षित खेती शुरु कर दी। 2019 में गांव सुरजेड़ा में लगायें जा रहे एक दिवसीय सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के जागरुकता शिविर में प्राकृतिक खेती के बारे में जाना और प्राकृतिक खेती अपने पॉलीहाउस में करने की ठान ली। कुछ समय बाद 2019 में पंचायत झम्बर में लगे दो दिवसीय सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के शिविर में सुरेश जी ने भाग लिया। उनके पास देसी गाय न होने के कारण उनको शुरु में दिक्कत आई लेकिन बाद में गांव की एक महिला कृषक श्रीमति वन्दना मेहता एक देसी नस्ल (साहीवाल) की गाय लेकर आई और उन्होंने मिलकर बिना किसी बाधा के प्राकृतिक खेती करना शुरु कर दिया।

आज सुरेश जी 66 वर्ष उम्र होने के बावजूद भी गोबर गौमूत्र एकत्रित करके जीवामृत, घनजीवामृत, बीजामृत, बह्मास्त्र और दशपर्णी अर्क खुद घर पर ही तैयार करते हैं। पड़ोस के कुलदीप कुमार, रुप लाल, बंदना, मेहता और सुरेश जी प्राकृतिक खेती के घटक मिलकर तैयार करते हैं।

''प्राकृतिक खेती ना सिर्फ बंजर भूमि में जान डालती है बल्कि हमें और हमारे बच्चों को अच्छा पौष्टिक भोजन प्रदान करती है। समय रहते अगर हम सब इस खेती को अपना लेंगे तो फिर से भारत को सोने की चिड़िया बना सकते हैं।''

सुरेश जी कहते हैं कि इस खेती को मैनें इसलिए भी आपनाया है क्योंकि यह सात्विक और आध्यात्मिक कृषि है। सुरेश जी वर्ष भर अपने पॉलीहाउस में फ्रासबीन, मटर, पालक, धनिया, खीरा, मेंथी, प्याज़ की पौध उगाते हैं। वह बताते हैं कि राष्ट्रीय सेवा संघ से जुड़े होने के कारण बहुत से लोगों का मेरे घर आना जाना रहता है उन्में से बहुत से लोग मेरे पॉलीहाउस से सब्जियां खरीद कर ले जाते हैं और इस कृषि पद्धति की भी विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हैं।

पॉलीहाउस में तैयार मटर+फ्रासबीन+पालक+धनिया की प्राकृतिक फसल

परिवार के साथ सुरेश चंद

खेतों में काम करते हुए

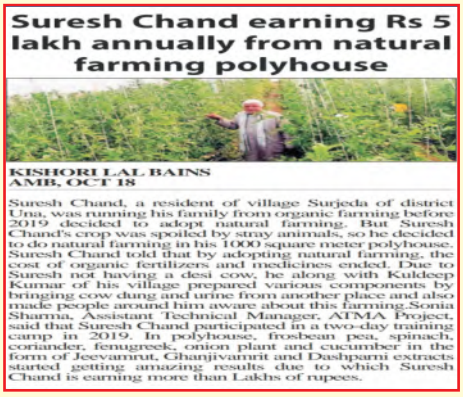

Suresh Chand earning Rs 5 lakh annually from natural farming polyhouse

KISHORI LAL BAINS
AMB, OCT 18

Suresh Chand, a resident of village Surjeda of district Una, was running his family from organic farming before 2019 decided to adopt natural farming. But Suresh Chand's crop was spoiled by stray animals, so he decided to do natural farming in his 1000 square meter polyhouse. Suresh Chand told that by adopting natural farming, the cost of organic fertilizers and medicines ended. Due to Suresh not having a desi cow, he along with Kuldeep Kumar of his village prepared various components by bringing cow dung and urine from another place and also made people around him aware about this farming.Sonia Sharma, Assistant Technical Manager, ATMA Project, said that Suresh Chand participated in a two-day training camp in 2019. In polyhouse, frosbean pea, spinach, coriander, fenugreek, onion plant and cucumber in the form of Jeevamrut, Ghanjivamrit and Dashparni extracts started getting amazing results due to which Suresh Chand is earning more than Lakhs of rupees.

प्राकृतिक खेती पॉलीहाउस से सलाना पांच लाख रुपए कमा रहा है सुरेश चंद

ऊना : देश प्यार : नरेश सिंधा :

जिला ऊना के गांव सुरजेडा के रहने वाले सुरेश चन्द 2019 से पहले जैविक खेती से अपना परिवार चला रहा था 2019 में आतमा परियोजना के तहत आयोजित एक जागरूकता शिविर में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में सुना व साथ ही बढ़ते खर्चों का विकल्प ढूंढ सुरेश ने प्राकृतिक खेती अपनाने का निर्णय लिया। लेकिन सुरेश चन्द की फसल को आवारा पशु खराब कर देते थे इसलिए प्राकृतिक खेती अपने 1000 वर्ग मीटर के पॉलीहाउस में करने का निर्णय किया सुरेश चन्द ने बताया कि प्राकृतिक खेती अपनाकर जैविक खादों और दवाइयों का खर्चा खत्म हो के कारण अपने गांव के कुलदीप कुमार के साथ मिलकर गाय का गोबर गोमूत्र प्रयोग दूसरी जगह से लाकर विभिन्न घटक तैयार किए और साथ ही अपने आस पास के लोगों को भी इस खेती के लिए जागरूक किया

आतमा परियोजना के सहायक तकनीकी प्रबंधक सोनिया शर्मा ने बताया कि सुरेश चन्द ने 2019 में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया । पॉलीहाउस में फ्रासबीन मटर, पालक, धनिया,मेथी प्याज की पौध और खीरा में जीवामृत, घनजीवामृत और दशपर्णी अर्क के अद्भुत परिणाम मिलने शुरू हुए जिससे सुरेश चन्द लाखों रुपए कम रहा है ।

गया। सरेश के पास देसी गाय नहीं होने

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
1.25 बीघा	फ्रासबीन+मटर पालक+धनिया मेथी+प्याज़ की पौध	90,000	350000	240000	60000	360000	300000

वेसहारा देसी गाय बनी आमदनी का साधन

जोगिन्द्र पाल
गांव : लोअर बसाल
ग्राम पंचायत : बसाल
विकास खण्ड : ऊना
दूरभाष संख्या : 9882258107
नौणी विश्वविद्यालय में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

जोगिन्द्र पाल का मुख्य व्यवसाय कृषि है वह अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए अपनी भूमि पर पिछले 20 वर्षों से रासायनिक खेती कर रह थे, उससे पहले भी उनके पूर्वज रासायनिक खेती ही कर रहे थे। जिससे उनकी भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण हो गई थी और अधिक लागत व कम उत्पादन से जोगिन्द्र जी बहुत परेशान थे।

वर्ष 2018 में, कृषि विश्व विद्यालय, पालमपुर में जोगिन्द्र जी ने छः दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया। घर आकर जब उन्होंने परिवार वालों से इसके बारे में बात की तो कोई भी तैयार नहीं हुआ। बहुत समझाने पर घर वाले 1 बीघा जमीन पर प्राकृतिक खेती करने के लिए मान गए। गोबर-गौमूत्र की आपूर्ति के लिए जोगिन्द्र जी ने आवारा छोड़ी गई वेसहारा देसी गाय को अपने घर में बांधा और प्राकृतिक खेती गेहूँ और चना (मिश्रित खेती) की बिजाई कर दी। रासायनिक और प्राकृतिक खेती से तैयार खेतों के खर्चे की तुलना की तो उन्होंने पाया कि प्राकृतिक खेती में सह-फसल बेच कर वह अपनी मुख्य फसल का खर्चा निकाल सकते हैं।

> '' पिछले 2 वर्षों से जिला ऊना के अधिकतर इलाकों में फॉल आर्मी वॉर्म का प्रकोप बहुत हो रहा है, लेकिन मेरे खेत में फसल बिल्कुल स्वस्थ है क्योंकि मैंने अग्निस्त्र और दशपर्णी अर्क का प्रयोग प्रकोप से पहले ही शुरु कर दिया था। जहाँ अन्य किसानों ने अपनी फसल बचाने के लिए इतना खर्चा किया वहीं मेरा खर्चा न के बराबर हुआ और मक्की की भरपूर फसल प्राप्त हुई।''

धीरे-धीरे उन्होंने सभी फसलें प्राकृतिक तरीके से उगानी शुरु कर दी। धान में रासायनिक खेती से ज़्यादा व्यय हो रहा था। इसलिए उन्होंने धान भी प्राकृतिक तरीके से करनी शुरु कर दी। जिसमें वह 12.5 बीघा में प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। जब से प्राकृतिक खेती को अपनाया है, सब्जी मण्डी में मेरे द्वारा दी जाने वाली सब्जियों की खास पहचान बन गई है। प्राकृतिक खेती से तैयार उत्पादों की गुणवत्ता रासायनिक की तुलना में अधिक अच्छी है। आजकल लोग सेहत को लेकर अधिक जागरुक हो गए है इसलिए रासायन रहित सब्जियों की मांग बढ़ती जा रही है।

वह कहते हैं कि प्राकृतिक विधि ने उनकी खेती को बदलने के साथ जीवन में भी बदलाव लाया है। अब वह देसी बीजों को संरक्षित करने के साथ-साथ आस-पास के उन्नत किसानों को अपने साथ प्राकृतिक खेती करने के लिए जोड़ रहे हैं।

बरसाती प्याज़ की पौध के साथ

अगेती भिण्डी की फसल के साथ

धान की प्राकृतिक फसल

आलू की मुख्य फसल की बिजाई करते हुए

गोभी की पौध बीजामृत के साथ संस्कारित करते हुए

देवभूमि मिरर

खबर एक्सप्रेस (ऊना)

बसाल के कृषक ने की प्राकृतिक खेती से कामयाबी हासिल

(अभिषेक/देवभूमि मिरर) ऊना। जिला हिमाचल प्रदेश का अन्नदाता कहा जाता रहा है। हरित क्रांति के आने के बाद से ही यहां कृषि एक व्यवसाय के तौर पर उभरा है। उपजाऊ जमीन और सोमभद्रा नदी के आशीर्वाद से यह क्षेत्र खेती की एक मिसाल है। किंतु हरित क्रांति के समय से जारी कीटनाशक छिड़काव ने मृदा को अस्वस्थ कर दिया है। यह कहना है जोगिंदर कुमार का जो गांव बसाल में विगत 3 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। उनका पूरा परिवार भी इसमें उनका हाथ बांटता है। जोगिंदर जी ने प्राकृतिक खेती का प्रशिक्षण पदम सुभाष पालेकर से लिया था इसके पश्चात उन्होंने मन से इस विधि को अपनाया है। वह अपने खेतों में जीवामृत, घनजीवामृत तथा खट्टी लस्सी का छिड़काव पालेकर जी की विधि अनुसार ही करते हैं। जोगिंदर जी ने यह भी बताया कि उनकी लागत कम हुई है जिस वजह से उनकी आमदनी बढ़ी है। उन्होंने यह भी बताया कि समय समय पर आत्मा परियोजना के अधिकारी उनके खेत में आते रहते हैं और नयी तकनीकों से भी अवगत कराते रहते हैं। जोगिंदर जी स्वयं भी प्रशिक्षण देते रहते हैं। अभी उन्होंने धान की खेती भी इसी तकनीक से की है तथा उन्हें पूर्ण विश्वास है कि फसल अच्छी निकलेगी। ध्यान रहे कि हिमाचल प्रदेश सरकार ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए आत्मा परियोजना के अंतर्गत प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना चला रखी है, जिसके माध्यम से जोगिंदर के प्रदर्शनी प्लाट भी लगाया गया था।

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
12.5 बीघा	आलू+मटर,बरसाती प्याज़, गेहूं+चना+सरसों,प्याज़ +मेथी+गोभी,भिण्ड ी +हल्दी+हरी मिर्च,कद्दूवर्गीय फसलें, गण्डि याली, मक्की+माह	75,000	2,40,000	1,65,000	30,000	2,70,000	2,40,000

सामूहिक तौर पर कर रहे हैं प्राकृतिक खेती

श्री गुरु रविदास जी महाराज स्वयं सहायता समूह
बनगड़ पुखरु
गांव : बनगड़
ग्राम पंचायत : झम्बर
विकास खण्ड : ऊना
दूरभाष संख्या : 97363-62392

कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर में छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त।

श्री गुरु रविदास स्वयं सहायता समूह श्रीमति कृष्णा देवी के नेतृत्व में गत 3 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रहा है। वर्ष 2016 में श्री गुरु रविदास जी महाराज स्वयं सहायता समूह का गठन आतमा परियोजना ऊना द्वारा विभिन्न परियोजनाओं को इस लाभ समूह तक पहुंचाया गया। समूह की अध्यक्ष श्रीमति कृष्णा देवी अत्यंत कर्मठ और निष्ठावान किसान है। वर्ष 2018 में आतमा परियोजना के तहत कृषि विश्व विद्यालय, पालमपुर में सुभाष पालेकर जी से छः दिन का प्रशिक्षण प्राप्त किया और अपने समूह को घर आकर इसकी जानकारी दी लेकिन नई विधि सोचकर बाकी लोगों ने इसे अपनाने से मना कर दिया। लेकिन कृष्णा देवी ने हार नहीं मानी और प्राकृतिक खेती करना शुरु कर दिया। वर्ष 2018 में उन्होंने गेहूँ+चना+सरसों की बिजाई की और गोबर, गौमूत्र का परबन्ध इन्होंने गौशाला से किया। उन्होंने पाया कि उस साल गेहूँ में पीला रतुआ की समस्या बिल्कुल भी नहीं आई और जीवामृत, घनजीवामृत, नीमास्त्र (चने में सुड़ी के लिए) के परिणाम भी आश्चर्यचकित करने वाले थे। इस तरह कृष्णा देवी ने धीरे-धीरे लगभग सारी भूमि को प्राकृतिक खेती में बदल दिया। तीन साल पहले उसी समय उन्होंने आम और नींबू प्रजाति का बगीचा लगाया था जिसे उन्होंने पूर्ण रुप से पराकृतिक तरीके से करने का फैसला किया और अद्भूत परिणाम पाए।

कृष्णा देवी के पास लगभग 25 बीघा (50 कनाल) जमीन है जिसमें वह सभी मौसमी सब्जियां गेहूं+चना+सरसों, मक्की+माह+तिल,सरसों/तिल+आम+नीबूं उगा रही हैं। उनकी जमीन पथरीली होने की वजह से सरसों, चना, तिल, माह की फसल काफी अच्छी होती है लेकिन बीज की मात्रा ज्यादा डालनी पड़ती है। कृष्णा देवी जी कहती हैं कि वह प्राकृतिक खेती से तैयार आम, आँवला, बड़हर (ढेऊँ), नीबूं व हरी मिर्च का आचार व देसी घी बेच कर एक अच्छी आय न केवल अपने समूह की महिलाओं के लिए भी प्राप्त कर रही है। समूह की सदस्य मिलकर ज़हरमुक्त उत्पाद उगा रही हैं। इसमें कुछ भी बाजार से लाने की आवश्यकता नहीं होती और आपको शुद्ध व पौष्टिक भोजन प्राप्त होता है। आसपास के लोग और रिश्तेदार भी फोन कर के इस विधि की जानकारी पराप्त करते हैं।

''प्राकृतिक खेती से हमें आज एक अलग पहचान मिली है। समूह की लगभग सभी महिलाऐं प्राकृतिक खेती को अपना चुकी है। प्राकृतिक खेती करते हुए आतमा परियोजना, ऊना से मुझे जो संसाधन भण्डार का अनुदान मिला है उससे मुझे काफी अच्छी आय हो रही है''

-कृष्णा देवी, समूह अध्यक्ष

मक्की व माह की फसल दिखाते हुए

समूह में काम करते हुए महिला कृषक

वनगढ़ का समूह प्राकृतिक खेती से कमा रहा मुनाफा

ऊना : वनगढ़ गांव में सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती की तकनीक हासिल करने के बाद किसान सामूहिक चित्र में।

प्रीतम चंद 10 कनाल भूमि में कर रहा प्राकृतिक खेती

मुबारिकपुर, 16 अक्तूबर (केहर): विकास खंड अम्ब में कृषि विभाग किसानों को प्राकृतिक खेती करने के लिए बढ़ावा दे रहा है। किसान प्रीतम चंद पुत्र नानक चंद गांव सरोई पंचायत जुबेहड़ ने बताया कि उसने सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती प्रशिक्षण केंद्र सोलन से प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने गांव में ही 10 कनाल भूमि में प्राकृतिक खेती शुरू की। ग्रामीणों का प्राकृतिक खेती किसान ग्रुप बनाया गया है और हर किसान को प्राकृतिक खेती करने के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि 40 लीटर पानी, देसी गाय का गोबर 2 किलो, देसी गाय का मूत्र 2 किलो, 200 ग्राम व बेसन 200 ग्राम मिट्टी में मिलाकर मिश्रण बनाकर जीवामृत बनाकर खेती में इस्तेमाल करने के लिए किसानों को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने बताया यह देसी मिश्रण फसलों व सब्जियों का रस चूसने वाले कीड़ों से बचाव करता है। प्राकृतिक खेती करने से किसानों को कम खर्च से अधिक पैदावार हो रही है।

समूह की अध्यक्ष कृष्णा देवी ने बताया कि वे विगत 2 वर्षों से प्राकृतिक खेती कर रही हैं तथा उन्हें इसका बहुत फायदा हुआ है। फसल तुरंत आसपास के क्षेत्रों में ही बिक जाती है। अब वे नई प्रणाली के विषय में भी आतमा ऊना खंड से जानकारी प्राप्त कर रही हैं।

आतमा ऊना के खंड तकनीकी प्रबंधक डा. रजत दत्ता ने बताया कि वनगढ़ के समूह ने प्राकृतिक खेती को अपनाया है, जोकि हर्ष का विषय है तथा विभाग पूर्ण रूप से उन्हें बढ़ावा देने के लिए समर्पित है।

जिला स्तर पर जब भी जनमंच तथा ऐसे अनेक कार्यक्रम होते हैं तो इस समूह की विशेष प्रदर्शनी अवलोकन हेतु प्रस्तुत की जाती है। विभाग द्वारा अन्य महिलाओं को भी इस तकनीक से जोड़ रहा है।

कृषि स्वयं सहायता समूह ने एक नई मिसाल जिला स्तर पर पेश की है। इस समूह की महिलाओं ने प्राकृतिक खेती की तकनीक का प्रशिक्षण आतमा परियोजना के अधिकारियों से प्राप्त किया तथा आज वे सामूहिक स्तर पर प्राकृतिक खेती

कुल क्षेत्र	फसलें	रसायनिक खेती			प्राकृतिक खेती		
		लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ	लागत	बिक्री	शुद्ध लाभ
22.5 बीघा	गेहूं+चना	75,000	2,40,000	1,65,000	30,000	2,70,000	2,40,000

प्राकृतिक खेती पर किये गए कुछ वैज्ञानिक प्रयोगों के निष्कर्ष

✍इस विधि से डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम गतिविधियों को बढ़ावा मिलता सिद्ध हुआ है। यह एंजाइम सीधे मिट्टी की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं। 'रासायनिक ' और 'जैविक खेती की तुलना में 'सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती' के तहत डिहाइड्रोजिनेज एंजाइम की गतिविधि (DHA) उच्चतम (8.4µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज की गई, यानि मिट्टी की गुणवत्ता फसल उत्पादन के बाद बढ़ती प्रतीत हुई है।

✍इसके आलावा, क्षारीय फॉस्फेटेज जैसी अन्य एंजाइम गतिविधियों को भी प्राकृतिक खेती' के तहत 'रासायनिक खेती' से अधिकतम (112µg TPFg^{-1} h^{-1}) दर्ज किया गया। अतः SPNF प्रणाली 'रासायनिक एवं 'जैविक खेती ' के मुकाबले में बढ़ी हुई एंजाइम गतिविधियों द्वारा मिट्टी की उर्वरा शक्ति में सुधार करने हेतु अधिक कारगर सिद्ध हुई है।

✍प्रणाली में देसी केंचुओं की आबादी में भी अधिक वृद्धि देखी गई। 'प्राकृतिक खेती' के तहत विभिन्न उच्च घनत्व वाले सेब के बगानों में, केंचुओं की आबादी उच्चचम दर्ज की गई जो मिट्टी के 0-15 सेमी गहराई में 32 केंचुआ/फीट थी। ये केंचुआ प्रजाति, मिट्टी के स्वास्थय और गुणवत्ता को बेहतर बनाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मृदा को नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियं आदि जैसे कई पोषकॉ तत्वों द्वारा समृद्ध बनाते हैं। केंचुआ छाल (कास्टिंग) में प्रमुख रुप से बैक्टीरिया, एंजाइम, पौधे के अपघटित अवशेष, केंचुआ कुकुन, पशुओं एवं अन्य जीवों के अपशिष्ट इत्यादि जैविक मिश्रण के रुप में विद्यमान होते हैं। केंचुआ छाल (कास्टिंग) आसानी से उपलब्ध पानी में घुलनशील पौधे पोषक तत्वों का बहुत समृद्ध स्त्रोत हैं, जो कि उपरी मिट्टी में सामान्य रुप में मौजूद ह्यूमय (Humus) की तुलना में अधिक होते हैं।

✍प्रदेश के ठंडे रेगिस्तानी क्षेत्र में यह विधि मिट्टी में मनी की मात्रा, 'रासायनिक' एवं 'जैविक खेती' के मुकाबले 1.5-7.9 अधिक बनाए रखने में सिद्ध हुई है। SPNF खेती के तहत किए गए एक शोध में मटर-टमाटर की फसल उत्पादन के एक साल उपरान्त मिट्टी में नाइट्रोजन की उपलब्धता में 329 कि.ग्रा./है. से 358 कि.ग्रा. है. की वृद्धि दर्ज की गई ।

प्राकृतिक खेती ही क्यों?

✍प्राकृतिक खेती कीटनाशकों, खरपतवारनाशी, वृद्धि हॉरमोन का इस्तेमाल करना निषेध करती है प्राकृतिक खेती मिट्टी के कटाव व प्रदूषण को कम करती है, भूजल और सतही जल में नाइट्रोजन की लीचिंग को खत्म करती है और पशु अपशिष्ट को वापस खेत में पुनार्कित करती है।

✍प्राकृतिक खेती से अधिक पौष्टिक और ज़हरमुक्त उत्पादन प्राप्त होते हैं जिनसे बीमारियां होने का खतरा कम हो जाता है।

✍प्राकृतिक खेती की तुलना में लागत मूल्य लगभग न के बराबर है (या सह-फसल के उत्पादन से मुख्य फसल का खर्चा निकाला जा सकता है) जबकि उत्पादन में कोई कमी नहीं आती है।

✍प्राकृतिक खेती के घटक कोई भी व्यक्ति (बच्चे से बूढ़ा) आसानी से बिना किसी भय से तैयार कर सकते हैं। प्राकृतिक घटकों से न तो एलर्जी, न कोई सासं संबंधी बीमारी , न ही आँखों में जलन की कोई भी शिकायत सामने आई है।

✍प्राकृतिक खेती से तैयार सब्जियों, अनाज, फलों व फूलों की उच्च गुणवत्ता होती है और साथ ही उनका भण्डारण -काल भी अधिक होता है।

जिला स्तर पर तैनात कृषि अधिकारी

डॉ रविन्द्र सिंह जसरोटिया
जिला परियोजना निदेशक आतमा
मो. 94187-85407

डॉ राजेश राणा
जिला परियोजना उप-निदेशक आतमा
मो. 82192-99627

जिला स्तर पर तैनात आतमा अधिकारी

ऋषि गर्ग
कंप्यूटर प्रोग्रामर
मो. 70184-61164

बीना रानी
लेखाकार
मो. 94184-05577

कविता
कनिष्ठ कार्यालय सहायक
मो. 85805-32919

अभिषेक चौधरी
एन.एफ.एफ.
मो. 82192-75080

विकास खण्ड अम्ब

अजय कुमार
बी.टी.एम.
मो. 70183-32934

सोनू
ए.टी.एम.
मो. 89889-19214

दीक्षा सैणी
ए.टी.एम.
मो. 70185-81893

प्रियंका
बी.टी.एम.
मो. 79018-04899

उल्लास
ए.टी.एम.
मो. 98163-93503

सतीश कुमार
ए.टी.एम.
मो. 70181-37538

विकास खण्ड बंगाणा

विकास खण्ड
गगरेट

ओशिन
बी.टी.एम.
मो. 89880-38462

विमला कुमारी
ए.टी.एम.
मो. 85805-84696

गुरमीत सिंह
ए.टी.एम.
मो. 750807526

अंकुश शर्मा
बी.टी.एम.
मो. 94186-05353

दविन्द्र कौर
ए.टी.एम.
मो. 98781-88307

शिवांक जसवाल
ए.टी.एम.
मो. 98724-28328

विकास खण्ड
हरोली

विकास खण्ड
ऊना

डॉ रजत दत्ता
बी.टी.एम.
मो. 82190-37475

ओंकार सिंह
ए.टी.एम.
मो. 86270-57009

सोनिया कुमारी
ए.टी.एम.
मो. 70189-24866

प्राकृतिक खेती जिला ऊना छायाकार की नज़र में.....

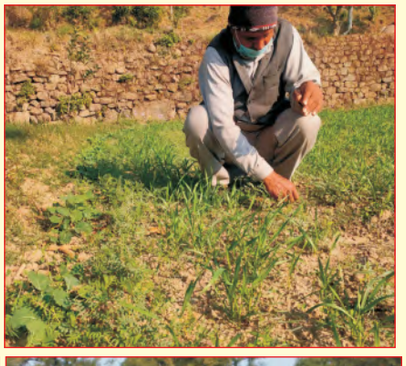

श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर जी महामहिम राज्यपाल हिमाचल प्रदेश बसाल गांव में प्राकृतिक खेती का अवलोकन एवं किसानों से वार्तालाप करते हुए

प्राकृतिक खेती जिला ऊना समाचार पत्रों में.....

दुलैहड़ में बच्चों ने सीखी प्राकृतिक खेती

टाहलीवाल। प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत सोमवार को राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला दुलैहड़ मे एक दिवसीय जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर प्रशिक्षक किसान रमन कुमार ने बच्चों को प्राकृतिक खेती के बारे जागरूक किया। उन्होंने बीज अमृत जीवामृत इत्यादि के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। शिविर में उपस्थित 50 विद्यार्थियों स स्कूल के शिक्षकों ने प्राकृतिक खेती के बारे में सीखा। शिविर में आत्मा परियोजना हरोली के खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा अ सहायक तकनीकी प्रबंधक दविंदर कौर ने प्राकृतिक खेती के बारे बताया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य जगजीत सिंह राणा

नगनोली में बताए प्राकृतिक खेती के फाय

हरोली, 18 अक्तूबर (दत्ता): विधानसभा क्षेत्र हरोली की ग्राम पंचायत नगनोली में प्राकृतिक खेती के अंतर्गत लोगों को 2 दिन का प्रशिक्षण दिया गया।

इसमें उत्कृष्ट किसान रमन कुमार और सुशील कुमार द्वारा किसानों को प्राकृतिक खेती में इस्तेमाल होने वाले घटकों की जानकारी दी गई। इसमें देसी गाय के गोबर व गौमूत्र से निर्मित घटकों को प्रैक्टीकली बनाकर भी दिखाया गया।

शिविर में लगभग 35 किसानों ने भाग लेकर अपने सेवन हेतु उत्पाद को जहर मुक्त पैदा करने का प्रण लिया।इस मौके पर आतमा परियोजना के अधिकारी खंड सहायक तकनीकी प्रबंधक शिवांक जसवाल ने किसानों को प्राकृतिक खेती के फायदे से अवगत करवाया। इस मौके पर पंचायत प्रतिनिधि व अन उपस्थित रहे।

हरोली : नगनोली में कृषि विभाग द्वारा आयोजित शिविर के दौरान ग्रामीणों संग विभागीय अधिकारी।

ऊना-मंडी में भी खुलेंगे बिक्री केंद्र

प्राकृतिक खेती से उगाए गए प्रोडक्ट की बढ़ती मांग पर फैसला

हिटी रिपोर्टर - शिमला

प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों के लिए राहत भरी खबर है। जीरो बजट खेती से उगाए जाने वाले प्रोडक्ट की मांग को देखते हुए सरकार सभी जिलों में बिक्री केंद्र खोलने का निर्णय लिया है। हालांकि शुरुआती दौर में शिमला के बाद मंडी व ऊना में खोलने का ऐलान किया है। दरअसल बुधवार को हिमाचल प्रदेश सचिवालय में प्राकृतिक खेती के उत्पादों की बिक्री के लिए खोले गए केंद्र की सफलता को देखते हुए, कृषि विभाग मंडी और ऊना जिला में भी इस तरह के बिक्री केंद्र खोलने पर विचार कर ने शिमला में कहा कि राज्य सचिवालय में खोला गया। बिक्री केंद्र सप्ताह में दो दिन कार्य कर रहा है और ग्राहकों की मांग के अनुसार भविष्य में इसे ज्यादा दिनों तक खोलने पर विचार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिला बिलासपुर के ओहर तथा जिला चंबा में प्राकृतिक खेती के उत्पादों के साप्ताहिक बिक्री केंद्र पहले ही कार्य कर रहे हैं। कृषि मंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती का मुख्य उद्देश्य कृषि लागत को कम कर कृषि को लाभदायक बनाना व विविध प्रकार के कृषि उत्पादों को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती से भूमि उपजाऊ बनती है, पर्यावरण सुरक्षित रहता है सुधार आता है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दे रही है,और इस दिशा में कृषि विभाग द्वारा किसानों को आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। रामलाल मार्कंडेय ने कहा कि प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के अंतर्गत इस वर्ष 50 हजार किसानों को प्रशिक्षण देने का लक्ष्य रखा गया है और अभी तक 20 हजार किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है। इनमें से 15 हजार किसानों ने प्राकृतिक खेती आरंभ कर दी है। उन्होंने कहा कि सरकार ने इस योजना के अंतर्गत 2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने का लक्ष्य निर्धारित

छपरोह पंचायत के वार्ड नंबर 5 में किसानों को शिविर में बताए प्राकृतिक खेती के तरीके

चिंतपूर्णी| छपरोह पंचायत के वार्ड नंबर 2 में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंध अभिकरण ऊना द्वारा हिमाचल प्रदेश सरकार की महत्वकांक्षी योजना प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में वार्ड नंबर 5 के किसानों को प्रशिक्षण देने के लिए 2 दिनों के शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान ट्रेंड फॉर्मर संदीप कुमार ने किसानों को प्राकृतिक खेती के फायदों के बारे में अवगत कराया तथा साथ में ही यूरिया और केमिकल खेती आदि के दुष्प्रभावों के बारे में बताया।

प्राकृतिक खेती विषय पर लगाया जागरुकता शिविर

प्राकृतिक खेती विषय पर आयोजित जागरूकता शिविर में उपस्थित गणमान्य।

बंगाणा (नीना) : कृषि विभाग सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण खंड बंगाणा के सौजन्य से प्राकृतिक खेती विषय पर जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अधिकारी उल्लास ने प्राकृतिक खेती में उपयोग कीटनाशक का प्रयोगतमक तरीका से जानकारी प्रदान की। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती में देसी गाय का गोबर और गो मूत्र का उपयोग होता है। उन्होंने किसानों को विभिन्न कीटनाशक की जानकारी प्रदान की। इस शिविर में 30 किसानों को प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम में किसान जगमोहन, मदन लाल, दिलबाग, राम आसरा शर्मा, जोगिन्द्र सिंह, रोहित, पूर्व उपप्रधान देस राज शर्मा, उपप्रधान नरेन्द्र कुमार, पंचायत समिति सदस्य जोगिन्द्र देव आर्य समेत किसान उपस्थित थे।

दैनिक सवेरा Wed, 08 September 2021
epaper.dainiksaveratimes.org/c/6

हरोली में किसानों को दी प्राकृतिक खेती की जानकारी

ऊना, 15 सितम्बर (सरोज): ग्राम पंचायत हरोली में कृषि विभाग द्वारा सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के अंतर्गत 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इसमें आत्मा परियोजना के अधिकारियों द्वारा किसानों को विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियां प्रदान की गईं। अनुभवी किसान ट्रेनर रमन कुमार ने किसानों को प्राकृतिक खेती के लाभ बताते हुए प्रैक्टिकली रूप से प्राकृतिक खेती में उपयोग होने वाले विभिन्न घटकों के बारे में बताया।

इस मौके पर आत्मा परियोजना के अधिकारी खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा ने किसानों को आने वाली फसलों में प्राकृतिक तरीके से कीट और बीमारियों से रोकथाम अग्नियस्त्र ब्रमस्तर का प्रयोग करने के बारे जानकारी दी। इस मौके पर सहायक तकनीक प्रबंधक दविंदर कौर और शिवांक जसवा भी मौजूद रहे।

ऊना : ग्राम पंचायत हरोली में कृषि विभाग द्वारा सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के अंतर्गत आयोजित 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिवि के दौरान विभागीय अधिकारियों के साथ किसान।

टक्का में प्राकृतिक खेती करना सीखेंगे किसान

ऊना, 29 अक्तूबर (सुरेन्द्र): किसानों को प्राकृतिक खेती की तकनीक से हो रहे अनेक प्रकार के फायदे देखते हुए प्रदेश सरकार एक मुहिम चला रही है जिसमें आतमा परियोजना बढ़-चढ़कर कार्य कर रही है। यह बात आज तरसेम लाल ने टक्का में आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित आतमा परियोजना के किसान गोष्ठी कार्यक्रम के दौरान कही। किसान गोष्ठी में इलाके के स्वतंत्रता सेनानियों तथा सेना में बलिदान देने वाले सैनिकों को याद किया गया। किसानों को 2 दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान प्राकृतिक खेती के संदर्भ में प्रशिक्षण दिया जाएगा।

पशु चिकित्सक डा. दीपिका ने भी इस विषय पर किसानों को संबोधित किया। टक्का के अग्रणी किसान प्रवीन शर्मा ने भी किसानों को प्राकृतिक खेती के घटकों का ज्ञान दिया। इस अवसर पर खंड तकनीकी प्रबंधक डा. रजत दत्ता, अतिरिक्त खंड तकनीकी प्रबंधक सोनिया कुमारी और ओंकार सिंह भी उपस्थित रहे। आतमा परियोजना ऊना ने प्रदर्शनी भी लगाई है जिसमें विभिन्न घटक और सब्जियों का प्रदर्शन किया गया है।

हलेडा बिलना के किसानों ने सीखी प्राकृतिक खेती

हरोली। हरोली के गांव हलेडा बिलना में आत्मा परियोजना के तहत दो दिवसीय खेती प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के बारे में जागरूक किया गया। शिविर में प्रगतिशील किसान विजय कुमार ने प्राकृतिक खेती के विभिन्न सिद्धांतों व बीज संस्कार से लेकर फसलों में लगने वाले कीड़ों व बीमारियों से बचाव में उपयोग होने वाली देसी गाय के गोबर गोमूत्र से निर्मित बीजामृत जीवामृत व रोगनाशी दवाओं को बनाकर दिखाया। शिविर में आत्मा परियोजना हरोली के अधिकारी खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा व सहायक तकनीकी प्रबंधक दविंदर कौर ने किसानों को खेती के बारे में अन्य महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। इस मौके पर पंचायत प्रधान सतनाम सिंह व अन्य पंचायती सदस्य भी उपस्थित रहे।

रासायनिक खेती के बढ़ते दुष्परिणामों बारे बताया

सलोह स्कूल में किसान जागरूकता शिविर आयोजित

हरोली, 28 अक्तूबर (दत्ता): गांव सलोह स्थित वन विहारी नंद ब्रह्मचारी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। स्कूल के प्रवक्ता विकास रतन ने बताया कि वीरवार को स्कूल में किसान जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना निदेशक डा. रविन्द्र जसरोटिया ने प्राकृतिक खेती के विषय में जानकारी दी। उन्होंने रासायनिक खेती के बढ़ते दुष्परिणामों के बारे में भी अवगत करवाया।

शिविर में प्राकृतिक तरीके से सब्जियों की एक वाटिका तैयार कर मटर, पालक, मूली, धनिया व मेथी की बिजाई की गई। इस अवसर पर विद्यार्थियों व शिक्षकों ने रासायनिक खेती छोड़कर प्राकृतिक खेती को अपनाने का संकल्प लिया। शिविर में खंड तकनीकी प्रबंधक अंकुश शर्मा व सहायक तकनीकी प्रबंधक शिवांक जसवाल ने प्राकृतिक खेती में प्रयोग होने वाले घटकों की जानकारी दी।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य डा. राजेश कौशल, उपप्रधानाचार्य सुदर्शन कौशल, विकास रतन, अवतार सिंह, जगदीश राम, बलजिन्द्र सिंह, नरेश कुमार, सुरेश कुमार व पूनम बंसल सहित विद्यार्थी व स्टाफ

सलोह में प्राकृतिक खेती की दी जानकारी

संवाद न्यूज एजेंसी

नारी (ऊना)। वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला सलोह में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के तहत शिविर लगाया गया। इस मौके पर परियोजना निदेशक डॉ. रविंदर जसरोटिया ने प्राकृतिक खेती की जानकारी दी।

उन्होंने रसायनिक खेती के बढ़ते कुप्रभावों से अवगत करवाया। उन्होंने सुझाव दिया कि स्कूल में प्राकृतिक तरीके से सब्जियों की वाटिका तैयार करके उसके परिणाम देखे जाएं। उनको अपने घर पर भी अमल में लाया जाए। स्कूल में मटर, पालक, मूली, धनिया, मेथी की बिजाई कर सकते हैं।

इस मौके पर 50 विद्यार्थियों सहित स्कूल के शिक्षकों ने रसायनिक खेती छोड़ कर प्राकृतिक खेती को अपनाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ. राजेश कौशल, उप प्रधानाचार्य सुदर्शन कौशल, प्रवक्ता विकास रतन, अवतार सिंह, जगदीश राम, बलजिंद्र सिंह, नरेश कुमार, सुरेश कुमार, पूनम बंसल मौजूद रहे।

प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना बारे दी जानकारी

अम्ब : पंचायत नैहरी नौरंगा में प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना के बारे में जानकारी लेते किसान।

ककराना में दो दिवसीय किसान गोष्ठी का हुआ समापन

बंगाणा, 29 अक्तूबर (नीना) : कृषि विभाग के सौजन्य से आत्मा परियोजना के तहत ककराना में दो दिवसीय किसान गोष्ठी का समापन हुआ। किसान गोष्ठी के समापन पर थानाकलां पंचायत प्रधान सरोज देवी ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। आत्मा परियोजना के निदेशक डा. रविन्द्र जसरोटिया और उप परियोजना निदेशक राजेन्द्र राणा ने किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती का ज्यादा से ज्यादा अपनाने को कहा, ताकि कुटलैहड़ के अधिकतम किसान प्राकृतिक खेती से जुड़ सकें।

रविन्द्र जसरोटिया ने कहा कि किसानों को कृषि विभाग द्वारा विभिन्न योजनाओं के तहत दी जा रही वित्तीय सहायता का लाभ लेने के लिए आगे आना चाहिए। जसरोटिया ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु किसानों से आग्रह किया कि वो इस पद्धति को आने वाले समय में भी जारी रखें ताकि लोगों तक जहर मुक्त खाद्य उत्पाद पहुँच सकें और स्वास्थ्य के साथ-साथ पर्यावरण को भी शुद्ध रख सकें। इस मौके पर उप-परियोजना निदेशक राजेश राणा, खंड तकनीकी प्रबंधक प्रियंका एवं सहायक तकनीकी प्रबंधक सतीश कुमार ने किसानों जहर-मुक्त खेती अपनाने को कहा। इसी के साथ किसानों को प्राकृतिक खेती के घटकों का प्रयोग कर उनके लाभों से भी अवगत कराया गया। इसी दौरान उद्यान विभाग के वीरेंद्र भारद्वाज, पशुपालन विभाग से डा. अभिनव सोनी, वरिष्ठ पशु चिकित्सक डा. सत्येंद्र ठाकुर ने अपने -अपने संबंधित विभागों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में भी किसानों को अवगत करवाया। इस मौके सविता देवी, विवेक कुमार, सावित्री देवी, दिनेश कुमार समेत 50 के लगभग किसान मौजूद थे।

खेतीबाड़ी

राज कुमार ने अपनाई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती

जहर मुक्त खेती करने का संदेश दिया

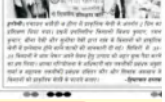

जीवामृत बनाने बारे दिया प्रशिक्षण

नंगल जोखतां में 2 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

नंगल जोखतां : नंगल जोखतां में आयोजित प्रशिक्षण शिविर के समापन पर आत्मा परियोजना के निदेशक डा. आर.एस. जसरोटिया सम्मानित करते हुए (इनसैट में) व उपस्थित किसान।

बहडाला में किसानों को दी प्राकृतिक खेती की जानकारी

ऊना। ग्राम पंचायत बहडाला में आत्मा परियोजना की तरफ से दो दिन के प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 30 किसानों ने हिस्सा लिया। शिविर में पहुंचे किसानों को सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। आत्मा परियोजना के सहायक प्रौद्योगिकी प्रबंधक ओंकार ने बताया कि शिविर में किसानों को कृषि संबंधित जानकारी उपलब्ध करवाई गई। इस अवसर पर ट्रेनर फार्मर सुदेश कुमारी, सतीश कुमार, पंचायत प्रधान रमेश चंद, उपप्रधान अभिनाश राणा, राम मूर्ति शर्मा, माया देवी, अनिता शर्मा, पूनम शर्मा, राज कुमारी, शाम लाल धीमान, पवन कुमार, रमेश चंद सहित अन्य उपस्थित रहे।

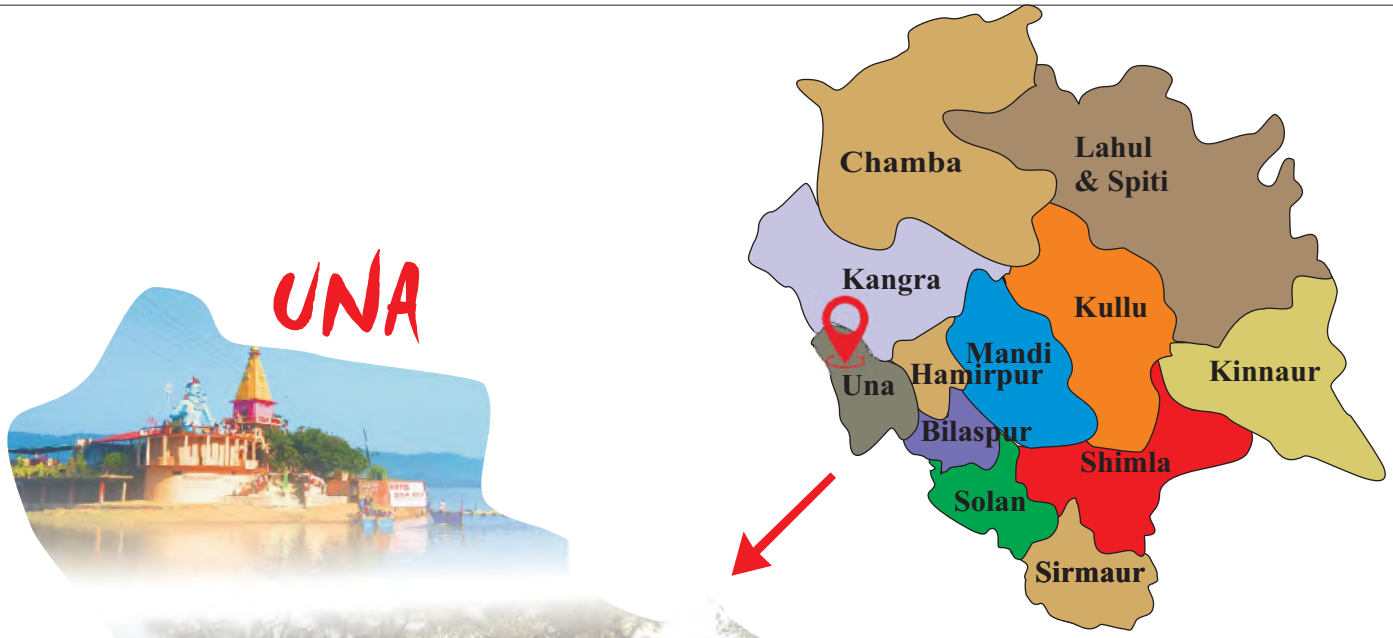

सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती
राज्य परियोजना कार्यान्वयन इकाई
कृषि भवन, शिमला-5 हि.प्र.| दूरभाष 01975-223211| ईमेल : spnf-hp@gov.in
facebook.com/SPNFHP twitter.com/spnfhp youtube.com/SPNFHP